CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14'5

बिंदु में सिंधु

डॉ. पी. डी. शर्मा

5276

गाला पब्लिशर्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिंदु में सिंधु

(विश्व की श्रेष्ठ सूक्तियों तथा कहावतों का संग्रह)

संकलनकर्ता
डॉ. पी. डी. शर्मा

मूल्य : रु. ६·००

5276

GALA

गाला पब्लिशर्स

सुखरामनगर के पीछे, गोमतीपुर,
अहमदाबाद–३८० ०२१.
फोन : ३६ ५७ १५

भवानीशंकर रोड, शारदाश्रम,
दादर, बम्बई–४०० ०२८.
फोन : ४३० ७२ ८६

धनलाल ब्रदर्स डिस्ट्रिब्युटर्स
७०, प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई–४०० ००२.
फोन : २५ ३७ १६/३१ ७० २७

S181

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्मपित—

पूज्य सद्‌गत भाइयों की पुण्य स्मृति में

—डॉ. पी. डी. शर्मा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

इस छोटी-सी पुस्तक 'बिंदु में सिंधु' में मैंने विश्व के श्रेष्ठ कवि, लेखक, संत, विचारक, राजनीतिज्ञ तथा दार्शनिकों के विचारों का मंथन करके श्रेष्ठ सूक्तियों को संग्रहीत किया है। पुस्तक में विषयानुसार विश्व की श्रेष्ठ कहावतों का समावेश भी किया गया है।

विद्यार्थी-जगत तथा सामान्य मनुष्य के दैनिक उपयोग में आनेवाले साठ विषयों को काफी चिन्तन के बाद पसंद किया है। वाचक का समय बचाने की दृष्टि से इन विषयों को वर्णमाला के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक विषय पर श्रेष्ठतम सोलह से अठारह सूक्तियों तथा कहावतों को पसंद किया गया है। पुस्तक में गद्य-सूक्तियों के साथ-साथ पद्य-सूक्तियों का भी समावेश किया गया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि सूक्तियों तथा कहावतों में थोड़े शब्दों में ही गागर में सागर की भाँति विशाल विचार बड़े ही निराले ढंग से छिपे रहते हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि निबंध-लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं तथा अन्य प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में यह पुस्तक काफी उपयोगी साबित होगी।

कितने ही विद्यालयों में प्रतिदिन सूक्तियाँ श्याम-पट पर लिखी जाती हैं। ऐसे विद्यालयों के लिए यह पुस्तक संदर्भ-ग्रंथ का काम करेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मैंने अपनी तरफ़ से बिंदु में सिंधु भरने की सम्पूर्ण कोशिश की है। फिर भी, इस पुस्तक को सुधारने के सुझावों का सदैव स्वागत है।

अपने इस प्रयास को सफल बनाने के लिए मैं उद्धृत सूक्तियों के रचयिताओं तथा प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

अन्त में, गाला पब्लिशर्स ने मेरी यह पुस्तक छापने की जो तत्परता बतलायी है इसके लिए मैं उनका हृदयपूर्वक आभारी हूँ।

—डॉ. पी. डी. शर्मा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-तालिका

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कर्त्तव्य ...	५	बुद्धि-बुद्धिमान ...	३५
कर्म ...	६	भय (डर) ...	३६
कला-कलाकार ...	७	भलाई ...	३७
कवि-कविता ...	८	मन ...	३८
कष्ट (दु:ख, पीड़ा, विपत्ति) ...	९	मनुष्य (मानव) ...	३९
क्रोध ...	१०	माता (मातृत्व) ...	४०
खुशी (प्रसन्नता) ...	११	मुक्ति (मोक्ष) ...	४१
गरीब-गरीबी		मूर्ख (मूर्खता) ...	४२
(निर्धन-निर्धनता) ...	१२	मृत्यु ...	४३
गलती (भूल) ...	१३	मौन ...	४४
चरित्र ...	१४	यौवन (जवानी) ...	४५
चिन्ता ...	१५	राजनीति ...	४६
जीवन ...	१६	लज्जा ...	४७
दान ...	१७	विचार ...	४८
दोष-दोषी ...	१८	विद्या ...	४९
दोस्त-दोस्ती (मित्र-मित्रता) ...	१९	विवेक ...	५०
धन-धनी ...	२०	विश्वास ...	५१
धर्म ...	२१	वीरता ...	५२
धीरज (धैर्य) ...	२२	शांति ...	५३
ध्येय (लक्ष्य) ...	२३	शिक्षा ...	५४
नम्रता ...	२४	संस्कृति ...	५५
नारी ...	२५	सज्जन-सज्जनता ...	५६
निराशा ...	२६	सत्य ...	५७
परमात्मा (ईश्वर, प्रभु) ...	२७	साहस ...	५८
पाप-पुण्य ...	२८	सुन्दरता (सौन्दर्य) ...	५९
पुस्तक (ग्रंथ) ...	२९	सेवा ...	६०
प्रजातंत्र (लोकतंत्र) ...	३०	हिन्दी (राष्ट्रभाषा) ...	६१
प्रतिभा ...	३१	हृदय ...	६२
प्रशंसा ...	३२	क्षमा ...	६३
प्रार्थना ...	३३	ज्ञान-ज्ञानी ...	६४
प्रेम ...	३४		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्त्तव्य

१. कर्त्तव्य कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसको नाप-जोखकर देखा जाए। —शरच्चन्द्र

२. कर्त्तव्य का पालन ही चित्त की शांति का मूल मंत्र है। —प्रेमचन्द

३. कर्त्तव्य कठोर होता है, भावप्रधान नहीं। —जयशंकर प्रसाद

४. जो कार्य आपके सामने है उसे तत्काल एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्त्तव्य है— यही आज के अधिकार की पूर्ति है। —गेटे

५. दूसरे कर्त्तव्य को पूर्ण करने की क्षमता ही एक कर्त्तव्य की पूर्ति का पुरस्कार है। —जार्ज इलियट

६. कुछ न कुछ कर बैठने को ही कर्त्तव्य नहीं कहा जा सकता। कोई समय ऐसा भी होता है, जब कुछ न करना ही सबसे बड़ा कर्त्तव्य माना जाता है। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

७. कर्त्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी धोखा नहीं दे सकता। —प्रेमचन्द

८. कर्त्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता। —प्रेमचन्द

९. वैर लेना या करना मनुष्य का कर्त्तव्य नहीं है, उसका कर्त्तव्य क्षमा है। —महात्मा गांधी

१०. आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मानवमात्र का सबसे पहला और मुख्य कर्त्तव्य है। —स्वामी रामतीर्थ

११. ईश्वर शांति ही चाहता है और ईश्वर की इच्छानुसार चलना मानव का परम कर्त्तव्य है। —टालस्टाय

१२. जिस प्रकार दूसरों के अधिकार को सम्मान देना मानव का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार अपना सम्मान रखना भी उसका कर्त्तव्य है। —स्पेन्सर

१३. हमें अपना कर्त्तव्य करना चाहिए, दूसरे के मलिन कर्मों के विचारने से भी चित्त पर मलिन छाया पड़ती है। —जयशंकर प्रसाद

१४. जो काम अभेद-भावना की ओर ले जाता है, वह सत्कर्म है, कर्तव्य है, करणीय है। —डॉ. सम्पूर्णानन्द

१५. बहादुर होने के लिए मानव को अपने कर्त्तव्य से ज्यादा काम करना होता है। —रेनाल्ड्स

१६. बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्त्तव्य है। —महात्मा गांधी

* * *

कर्त्तव्य करना चाहिए, होगी न क्या प्रभु की दया,
सुख-दुःख कुछ हो, एक-सा ही सब समय किसका गया?
—मैथिलीशरण गुप्त

मानव! मत तू फिक्र कर, यश-अपयश सम हव्य;
बल, धीरज, मन, बुद्धि से, करता जा कर्त्तव्य।
—श्रीमन्नारायण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्म

१. कर्म निरंतर श्रेष्ठता और पवित्रता का द्योतक है । —कार्लाइल

२. कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है । —विनोबा भावे

३. कर्म की मुक्ति आनन्द में एवं आनन्द की मुक्ति कर्म में है । —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

४. कर्म वह आईना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है । अतः हमें कर्म का एहसानमंद होना चाहिए । —विनोबा भावे

५. हमारे कर्म हमें प्रभु की कृपा के योग्य बनाते हैं, न कि हमारे वचन । —गिल्डी

६. कर्म की परिसमाप्ति ज्ञान में और कर्म का मूल भक्ति अथवा सम्पूर्ण आत्मसमर्पण में है । —अरविन्द घोष

७. वही कर्म सर्वश्रेष्ठ है जिससे बहुसंख्यक लोगों को अधिक से अधिक आनन्द की प्राप्ति हो सके । —फ्रांसिस हचिसन

८. कर्म सुख भले ही न ला सके परन्तु कर्म के बिना सुख नहीं मिलता । —डिजरायली

९. जहाँ देह है वहाँ कर्म तो है ही, उससे कोई मुक्त नहीं है; तथापि शरीर को प्रभु-मंदिर बनाकर उसके द्वारा मुक्ति-प्राप्ति करनी चाहिए । —महात्मा गांधी

१०. उच्च कर्म महान मस्तिष्क को सूचित करते हैं । —जॉन फ्लीचर

११. मानव के कर्म ही उसके विचारों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है । —लॉक

१२. जीवन में किये हुए कर्म को परिवर्तित करने की पूर्ण असम्भाव्यता से अधिक दुःखमय और कुछ नहीं है । —गार्ल्सवर्दी

१३. भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो, विश्वास न करो — भूतकाल की भी चिन्ता न करो, जो कुछ करना है उसे स्वयं पर और ईश्वर पर विश्वास रखकर वर्तमान में करो । —लोंगफेलो

१४. निष्काम कर्म ईश्वर को ऋणी बना देता है, और ईश्वर उसको सहज व्याज सहित वापस करने के लिए विवश हो जाता है । —स्वामी रामतीर्थ

१५. फल मानव के कर्माधीन है, बुद्धि कर्मानुसार आगे बढ़नेवाली है, तथापि विद्वान् और महात्मा अच्छे प्रकार से सोचकर ही कोई कर्म करते हैं । —चाणक्य

१६. हम अपना मूल्यांकन कार्य करने की अपनी क्षमता से करते हैं; जबकि दूसरे हमारा मूल्यांकन हमारे किये हुए कर्म से करते हैं । —लोंगफेलो

* * *

कर्म प्रधान विश्व करि राखा ।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा ।।
—तुलसीदास

एक कर्म है बोना, उपजै बीज बहूत ।
एक कर्म है मूंजना, उदय न अंकुर सूत ।।
—कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कला—कलाकार

१. सारी कला सिर्फ प्रकृति का ही अनुकरण है। —सेनेका

२. कला प्रकृति द्वारा देखा हुआ जीवन है। —एमिल जोला

३. कला विचार को मूर्ति में परिवर्तित कर देती है। —एमर्सन

४. मानव की बहुमुखी भावनाओं का प्रवल प्रवाह जव रोके नहीं रुकता तभी वह कला के रूप में फूट पड़ता है। —रस्किन

५. कला का सत्य जीवन की परिधि में, सौन्दर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है। —महादेवी वर्मा

६. कला अनुकरण नहीं करती; किन्तु व्याख्या करती है। —मेजिनी

७. सच्ची कला दैवी सिद्धि का केवल प्रतिविम्ब होती है और ईश्वर की पूर्णता की छाया होती है। —माइकेल एंजिलो

८. कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं है। कला दीखती तो यथार्थ है, पर यथार्थ होती नहीं। उसकी खूवी यही है कि वह यथार्थ मालूम हो। —प्रेमचन्द

९. जो कला आत्मा को आत्मदर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला ही नहीं है। —महात्मा गांधी

१०. प्रत्येक राष्ट्र के गुणावगुण सदा उसकी कला में अंकित रहते हैं। —रस्किन

११. कलाकार का आरम्भ ही शैशव के पुनरुत्थान से होता है। —रामधारीसिंह 'दिनकर'

१२. कलाकार प्रकृति का प्रेमी है, अतएव वह उसका दास भी है और स्वामी भी। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१३. कलाकार अपनी इच्छाओं से भी विशाल है। उसकी भाव-राशि अथाह एवं अचिन्त्य है। —मैक्सिम गोर्की

१४. जो अंतर को देखता है वाह्य को नहीं, वही सच्चा कलाकार है। —महात्मा गांधी

१५. कलाकार के निर्माण में जीवन के निर्माण का लक्ष्य छिपा रहता है। —महादेवी वर्मा

१६. कलाकार स्वयं एक साधक है, चाहे वह कला साहित्य हो, नृत्य हो, शिल्प हो अथवा और कुछ। —अनन्त गोपाल शेवड़े

* * *

कला हलाहल जानिये, जा मैं पतित विचार।
कलाकंद लै का करै, जो तहँ बड़ो विकार॥
—किशोरीदास वाजपेयी

सुन्दर को सजीव करती है,
भीषण को निर्जीव कला।
—मैथिलीशरण गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवि–कविता

१. कवि वह सपेरा है जिसकी पिटारी में सर्पों के स्थान पर हृदय वन्द होते हैं। – प्रेमचन्द

२. कवि जीवन का ऐसा साथी है जो आत्म-गाथा में हृदय-हृदय की गाथा कहता है। वह चलता स्वयं है, पर पग-पग पर सारे संसार का पथ प्रदर्शित करता है। – शरण

३. कवि यानी मन का मालिक। जिसने मन नहीं जीता वह ईश्वर की सृष्टि का रहस्य नहीं समझ सकता। – विनोबा भावे

४. सच्चे कवि तो वे माने जाते हैं, जो मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु देख सकें। – महात्मा गांधी

५. कवि जिस समय कविता करता है, वह अलौकिक मानव बन जाता है। – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

६. कवि केवल सृष्टि ही नहीं करता, सृष्टि की रक्षा भी करता है। जो स्वभाव से ही सुन्दर है, उसे और भी सुन्दर करके प्रकट करना जैसे उसका एक काम है, वैसे ही जो सुन्दर नहीं है उसे असुन्दर के हाथ से बचा लेना भी उसका दूसरा काम है। – शरच्चन्द्र

७. हमारी अन्तस्थ गुप्त भावनाओं को जाग्रत करने का सामर्थ्य जिसमें होता है वह कवि है। – महात्मा गांधी

८. पामर दुनिया विषय-सुख में झूमती है, कवि आत्मानंद में डोलता है। लोगों को भोजन का आनन्द मिलता है, कवि को आनन्द का भोजन मिलता है। – विनोबा भावे

९. सौन्दर्य की मादकता में झूमती हुई कवि की दृष्टि स्वर्ग से भूलोक और भूलोक से स्वर्ग तक विचरण करती रहती है। – शेक्सपियर

१०. कविता भावना का संगीत है, जो हमें शब्दों के संगीत द्वारा मिलता है। – लार्ड चैस्टरफील्ड

११. कविता सृष्टि का सौन्दर्य है, कविता ही सृष्टि का सुख है और कविता ही सृष्टि का जीवन-प्राण है। – पुरुषोत्तमदास टंडन

१२. कविता सच्ची भावनाओं का चित्र है और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दुःख की हों या सुख की, उसी समय सम्पन्न होती हैं जब हम दुःख या सुख का अनुभव करते हैं। – प्रेमचन्द

१३. कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है। – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

१४. सच्ची कविता हमेशा चेतना के किसी सूक्ष्म स्तर से आया करती है। सर्जनात्मक प्राण उसका वाहक है और हमारा बाह्य मन उसको व्यक्त करने का उपकरण। – श्री अरविन्द

१५. कविता वह कला है जिसमें कल्पना-शक्ति बुद्धि की सहायिका होकर सत्य और आनन्द का परस्पर सम्मिश्रण करती है। – डॉ. जानसन

१६. जिस प्रकार लज्जा का त्याग नारी के आकर्षण को समाप्त कर देता है उसी प्रकार कविता कल्पना और प्रेरणा से दूर निर्जीव हो जाती है। – शरण

* * *

जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुँचे कवि।

– कहावत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कष्ट (दु:ख, पीड़ा, विपत्ति)

१. कष्ट हृदय की कसौटी है। — जयशंकर प्रसाद

२. मानव-हृदय में दु:ख की चिता जो सदा जलती रहती है उसीके धुएँ के कारण नीले आकाश पर इतना अन्धकार छाया हुआ है। — शरण

३. मन का दु:ख क्या दूसरे के मन की चोट से भरेगा? आदमी ऐसा ही करता है, दु:खी को दु:ख पहुँचाकर धोना चाहता हैं। — जैनेन्द्रकुमार

४. दु:ख को दूर करने की एक ही अमोघ औषधि है — मन से दु:खों की चिन्ता न करना। — वेदव्यास

५. दु:ख मनुष्य के विकास का साधन है। सच्चे मनुष्य का जीवन दु:ख में खिल उठता है। सोना तपाने पर ही चमकता है। — हनुमानप्रसाद पोद्दार

६. दु:ख पर तरस खाना मानवीय है; दु:ख दूर करना देवतातुल्य है। — होरेस मैन

७. दु:ख का भोग करने में भी एक प्रकार का नाशकारी मोह है। मानव ने अपनी युग-युग की जीवन-यात्रा में यह देखा है कि कोई भी वड़ा फल किसी वड़े भारी दु:ख को उठाये विना नहीं प्राप्त किया जा सकता। — शरच्चन्द्र

८. दु:ख भोगने से सुख के मूल्य का ज्ञान होता है। — शेख सादी

९. गहरे दु:ख में वाणी मूक हो जाती है। — तालमुद

१०. मानसिक पीड़ा शारीरिक पीड़ा की अपेक्षा अधिक कष्टदायक होती है। — साइरस

११. पीड़ा पाप का परिणाम है। — महात्मा बुद्ध

१२. विपत्ति हीरे की धूल है जिससे परमात्मा अपने रत्नों को चमकाता है। — लेटन

१३. विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखानेवाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला। — प्रेमचन्द

१४. कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देनेवाले श्रेष्ठ गुण हैं, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते हैं वे अपने जीवन में विजयी होते हैं। — लोकमान्य तिलक

१५. जितने दु:ख, जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं उनका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्य-युक्त सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर हम भिन्नता का भाव रखते हैं। — स्वेट मार्डन

१६. निरन्तर सफलता हमें विश्व का केवल एक ही भाग दिखाती है, विपत्ति हमें चित्र का दूसरा भाग भी दिखाती है। — कोल्टन

* * *

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥
— रहीम

चिर ध्येय यही जलने का, ठंडी विभूति बन जाना।
पीड़ा की अन्तिम सीमा, दु:ख का फिर सुख हो जाना॥
— महादेवी वर्मा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोध

१. क्रोध मस्तिष्क के दीपक को बुझा देता है। — इंगरसोल

२. क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पश्चात्ताप पर खत्म होता है। — पैथागोरस

३. क्रोध के सिंहासन पर बैठते ही बुद्धि वहाँ से खिसक जाती है। — एम. हेनरी

४. क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से बुद्धि का नाश हो जाता है, और बुद्धि के नष्ट होने पर प्राणी स्वयं नष्ट हो जाता है। — भगवान् श्रीकृष्ण

५. जब क्रोध आये तो उसके परिणाम पर विचार करो। — कन्फ्यूशस

६. क्रोध प्राणनाशक शत्रु है, क्रोध अपरिमित मुखवाला बैरी है; क्रोध बड़ी तेज धार की तलवार है, क्रोध सब कुछ हर लेता है, मनुष्य जो तप, संयम और दान आदि करता है, उस सबको वह क्रोध के कारण नष्ट कर डालता है। अतएव क्रोध का त्याग करना चाहिए। — वामन पुराण

७. यदि आप आत्मरक्षा करना चाहते हैं तो अपने क्रोध को सँभाल लें। ऐसा न करने पर क्रोध आपका नाश कर देगा। — तिरुकुरल्

८. जिस क्रोधाग्नि को तुम शत्रु के लिए प्रज्वलित करते हो वह बहुधा तुम्हें ही अधिक जलाती है। — चीनी कहावत

९. जब क्रोध में हों तो दस बार सोचकर बोलिए, जब ज्यादा क्रोधित अवस्था में हों तो हजार बार सोचिए। — जेफरसन

१०. जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है। — सुकरात

११. क्रोध एक प्रचण्ड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है वह उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता वह स्वयं अपने को जला लेगा। — महात्मा गांधी

१२. जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है, तो अभिमान भी सिर झुका लेता है। —सुदर्शन

१३. किसी के प्रति मन में क्रोध लिये रहने की अपेक्षा उसे तत्क्षण प्रकट कर देना अधिक अच्छा है, जैसे क्षणभर में जल जाना देर तक सुलगने से अधिक अच्छा है। — वेदव्यास

१४. जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में कह नहीं सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१५. बुद्धिमानों ने अपनी लौकिक उन्नति, पारलौकिक सुख और मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्रोध पर विजय प्राप्त की है। — युधिष्ठिर

१६. जो मानव मन में उठे हुए क्रोध को दौड़ते हुए रथ के समान शीघ्र रोक लेता है, उसी को मैं सारथी समझता हूँ, क्रोध के अनुसार चलनेवाले को केवल लगाम रखने-वाला मात्र कहा जा सकता है। — महात्मा बुद्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खुशी (प्रसन्नता)

१. खुशी तन्दुरुस्ती है, इसके विपरीत उदासी रोग है। — हेली बर्टन

२. खुशी न हमारे अन्दर है और न बाहर है अपितु वह हमारा ईश्वर के साथ ऐक्य है। — पास्कल

३. प्रसन्न रहना हमारा फर्ज है। यदि हम प्रसन्न रहेंगे तो अज्ञात रूप से विश्व की बहुत भलाई करेंगे। — स्टीवेंसन

४. यदि विश्व में कोई एक गुण है जो हम सबका सदैव ध्येय होना चाहिए, तो वह प्रसन्नता है। — लार्ड लिटन

५. प्रसन्नता ही वह पहिया है जो प्रकृति के रथ को खींचता है। सृष्टि के रचना-क्रम के मूल में प्रसन्नता ही कारण है। — स्वेट मार्डन

६. प्रसन्नता परमात्मा की दी हुई औषधि है। — स्वेट मार्डन

७. प्रसन्नचित्त मनुष्य अधिक जीते हैं। — शेक्सपियर

८. प्रसन्नता आत्मा को शक्ति देती है। — सेमुएल स्माइल्स

९. जीवन में प्रसन्नता के विशिष्ट तत्त्व हैं, कर्म करने के, स्नेह देने के और आशा रखने के आधार पर जीना। — ऐडिसन

१०. प्रसन्नता और शोक वास्तव में मन की स्थितियाँ हैं और मन को वश में रखना अपने हाथ में है। — मार्कस औरे

११. चित्त प्रसन्न रहने से सब दुःख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है। — भगवान् श्रीकृष्ण

१२. प्रसन्न और हँसमुख रहने में कुछ प्रयास की आवश्यकता है। अपने को प्रसन्न रखना भी एक कला है। — लार्ड एवेबरी

१३. अत्यंत प्रसन्नचित्त मानव वह है जो अपने जीवन के आदि और अन्त से सम्बन्ध स्थापित करना जानता है। — गेटे

१४. भार हल्का हो जाता है यदि प्रसन्नतापूर्वक उठाया जाए। — ओविड

१५. यदि कोई मानव अप्रसन्न है तो वह उसी का दोष है; क्योंकि प्रभु ने सभी को प्रसन्न बनाया है। — इपिक्टस

१६. प्रसन्न रहने के लिए तुम आत्म-विस्मृत हो जाओ, परोपकारी बनो, दूषित विचार को दूर करने का सिर्फ यही एक उपाय है। — बुल्वर

* * *

औरों को हँसते देखो मनु
हँसो और सुख पाओ;
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।

— जयशंकर प्रसाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गरीब–गरीबी (निर्धन–निर्धनता)

१. गरीब वह है जिसका खर्च आमदनी से ज्यादा है। – ब्रूएयर

२. गरीब वे इन्सान हैं जो अपने को गरीब मानते हैं, गरीबी गरीब समझने में ही है। – एमर्सन

३. वह गरीव नहीं जिसके पास कम धन है परन्तु गरीब वह है जिसकी अभिलाषाएँ बढ़ी हुई हैं। – डेनियल

४. उस इंसान से ज्यादा गरीब कोई नहीं है, जिसके पास केवल पैसा है। – एडबिन पग

५. भगवान गरीब को गरीब रखकर आजमाता है कि वह हिम्मत रखता है या नहीं। – विनोबा भावे

६. गरीब होना और गरीब मालूम पड़ना यह कभी उन्नति न करने का एक निश्चित मार्ग है। – गोल्डस्मिथ

७. सभी महान धार्मिक नेताओं ने गरीबी को जान-बूझकर अपने भाग्य के समान अपनाया। मुहम्मद साहब ने कहा है कि गरीबी मेरा अभिमान है। – महात्मा गांधी

८. गरीबों के अलावा कुछ ही ऐसे इन्सान हैं, जो गरीबों के विषय में सोचते हैं। – एल. ई. लण्डन

९. जो गरीबों पर दया करता है, वह अपने कृत्यों से ईश्वर को ऋणी वनाता है। – बाइबिल

१०. गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है। – हैजलिट

११. गरीबी खुद अपमानजनक नहीं है, सिर्फ उस गरीवी को छोड़कर जो आलस्य, व्यसन, फिजूलखर्ची और मूर्खता के कारण हुई हो। –प्लूटार्क

१२. किसी भी तरह की गरीबी भगवान से हमारा उचित सम्वन्ध जोड़ देती है जबकि हर तरह की अमीरी, मन अथवा धन की, उससे हमारा विच्छेद करा देती है। – फ्रैंक क्रासले

१३. निर्धनता से मनुष्य को लज्जा होती है, लज्जा से पराक्रम नष्ट हो जाता है, पराक्रम न होने से अपमान होता है, अपमान होने से दुःख मिलता है, दुःख से शोक होता है, शोक से बुद्धि नष्ट हो जाती है, और बुद्धि न होने से नाश हो जाता है। निर्धनता ही सव आपत्तियों का घर है। – हितोपदेश

१४. निर्धनता सहने योग्य न होना लज्जाजनक बात है, लेकिन अपने कार्यों द्वारा उसे कैसे भगाना है, यह न जानना और भी शर्मनाक है। – पेरीक्लीज

१५. निर्धनता का भाव रखकर हम समृद्धि को अपने मानसक्षेत्र की ओर कैसे आकृष्ट कर सकते हैं? – स्वेट मार्डन

१६. निर्धनता प्रकट करना निर्धन होने से अधिक दुखदायी होता है। – प्रेमचन्द

* * *

दीन सवन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनवन्धु सम होय॥
– रहीम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गलती (भूल)

१. गलती वह ताकत है जो इंसानों को ठुकराकर आपस में मिलाती है, सत्य सिर्फ सत्य कर्मों से ही इंसानों में पहुँचाया जा सकता है। — टालस्टाय

२. गलती तो हर मनुष्य कर सकता है, किन्तु उस पर दृढ़ केवल मूर्ख ही होते हैं। — सिसरो

३. जो गलतियाँ नहीं करता, वह प्रायः कुछ नहीं कर पाता। — एडवर्ड जे. फेलप्स

४. वहुत-सी तथा वड़ी गलतियाँ किये विना कोई आदमी वड़ा और महान नहीं वनता। — ग्लेडस्टन

५. स्वयं की गलतियाँ जब हम दूसरों में देखते हैं तो हमें बड़ी जलन होती है। — जर्मन कहावत

६. अपनी गलती स्वीकार कर लेने में लज्जा की कोई वात नहीं है। इससे, दूसरे शब्दों में, यही प्रमाणित होता है कि वीते हुए कल की अपेक्षा आज आप अधिक बुद्धिमान हैं। — अलेक्जेण्डर पोप

७. गलतियाँ करके, उनको मंजूर करके और उन्हें सुधारकर ही मैं आगे बढ़ सकता हूँ। पता नहीं क्यों, किसी की चेतावनी से मैं उन्नति कर ही नहीं सकता। ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ। — महात्मा गांधी

८. विवेकशील पुरुष दूसरों की गलतियों से अपनी गलती सुधारते हैं। — प्यूब्लियस साइरस

९. जिस प्रकार विना घिसे हीरे पर चमक नहीं आती ठीक उसी तरह विना गलतियाँ किये मनुष्य सम्पूर्ण नहीं वनता। — चीनी कहावत

१०. यदि मानव सीखना चाहे तो उसकी हरेक भूल उसे कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती है। — डिकेन्स

११. यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार वन्द कर दोगे तो सत्य भी वाहर रह जायगा। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१२. भूल करने में पाप तो है ही, परन्तु उसे छिपाने में उससे भी बड़ा पाप है। — महात्मा गांधी

१३. गलती हमारे ज्ञान की नहीं बल्कि निर्णय की त्रुटि है जो झूठ के लिए अपनी मंजूरी दे देता है। — लॉक

१४. अपनी भूल अपने ही हाथों सुधर जाए तो यह इससे कहीं अच्छा है कि कोई दूसरा उसे सुधारे। — प्रेमचन्द

१५. हम वहुधा दूसरे के गुणों की अपेक्षा उनकी गलतियों से अधिक सीख लेते हैं। — लोंगफेलो

१६. सत्य का स्रोत भूलों के मध्य में से होकर बहता है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

* * *

एक भूल करके नहीं, होता कोई भ्रष्ट,
अनुचित है देना उसे, कुछ सामाजिक कष्ट।

— मैथिलीशरण गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरित्र

१. चरित्र ही मनुष्य की पूँजी है। — एमर्सन

२. चरित्र एक ऐसा हीरा है, जो हर किसी पाषाण को घिस सकता है। — बर्टल

३. चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए। — महात्मा गांधी

४. चरित्र जीवन में शासन करनेवाला तत्त्व है और वह प्रतिभा से उच्च है। — फ्रैडरिक साण्डर्स

५. चरित्र विना सफलता के भी रह सकता है। — एमर्सन

६. कर्म को बोओ और आदत को काटो, आदत को बोओ और चरित्र को काटो; चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो। — बोर्डमैन

७. चरित्रों से मनुष्य नहीं बनते। मनुष्य चरित्रों का निर्माण करते हैं। — उदयशंकर भट्ट

८. यह चरित्र ही है जो विपत्तियों की अभेद्य दीवारों में से भी मार्ग बना लेता है। — स्वामी विवेकानन्द

९. गुण एकान्त में अच्छी तरह विकसित होता है; चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है। — गेटे

१०. बहुत विद्वान होने से मनुष्य आत्म-गौरव नहीं प्राप्त कर सकता। इसके लिए सच्चरित्र होना परमावश्यक है। चरित्र के सामने विद्या का मूल्य बहुत कम है। — प्रेमचन्द

११. चरित्र वृक्ष है, प्रतिष्ठा छाया। — लिंकन

१२. चरित्र में परिवर्तन नहीं होता, विचार परिवर्तित होते रहते हैं, पर चरित्र विकसित अवश्य किया जाता है। — डिजरायली

१३. व्यक्तिगत चरित्र समाज की बड़ी आशा है। — चैनिंग

१४. चरित्र-बल पर मानव दैनिक कार्य, प्रलोभन और परीक्षा के विश्व में दृढ़तापूर्वक स्थिर रहते हैं और वास्तविक जीवन की क्रमिक क्षीणता को सहन करने योग्य होते हैं। — स्माइल्स

१५. दुर्बल चरित्र का व्यक्ति उस सरकंडे जैसा है जो हवा के हर झोंके पर झुक जाता है। — माघ

१६. चरित्र के लिए उतनी घातक कोई वस्तु नहीं जितने अपूर्ण कार्य। — डॉ. ला. जार्ज

* * *

चिंतन कर यह जान कि तेरी क्षण-क्षण की चिन्ता से,
दूर-दूर तक के भविष्य का मनुज जन्म लेता है;
उठा चरण यह सोच कि तेरे पद के निक्षेपों की,
आगामी युग के कानों में ध्वनियाँ पहुँच रही हैं।
— रामधारीसिंह 'दिनकर'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिन्ता

१. चिन्ता एक प्रकार की कायरता है और वह जीवन को विषमय वना देती है। – चैनिंग

२. चिन्ता एक ऐसी हथौड़ी है, जो मस्तिष्क के सूक्ष्म एवं सुकोमल सूत्रों तथा तंतुजाल को विघटित करके उसकी कार्यकारिणी शक्ति को नष्ट कर देती है। – स्वेट मार्डन

३ चिन्ता एक काली दीवार की भाँति चारों ओर से घेर लेती है, जिसमें से निकलने की फिर कोई गली नहीं सूझती। – प्रेमचन्द

४. चिन्ता शहद की मक्खी के समान है। इसे जितना हटाओ उतना ही और चिमटती है। – सुदर्शन

५. प्राणियों के लिए चिन्ता ही ज्वर है। – स्वामी शंकराचार्य

६. चिन्ता ही से चिन्ता दूर होती है। इस धोखे से रोकने का प्रयास करने से परिणाम उल्टा होता है। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

७. चिन्ता हर प्रकार की मुन्दरता और स्वास्थ्य की शत्रु है। – स्वेट मार्डन

८. चिन्ता से रूप, वल और ज्ञान का नाश हो जाता है। – एमर्सन

९. वासनाओं का त्याग करो, चिन्ताएँ स्वयं पीछा छोड़ देंगी। – महात्मा बुद्ध

१०. चिन्ता ने आज तक कभी किसी काम को पूरा नहीं किया। – स्वेट मार्डन

११. भविष्य की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए, उससे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। यदि चिन्ता की ही जाय तो चारित्रिक उन्नति की करनी चाहिए। – विवेकानंद

१२. व्यापारी, जिन्हें यह ज्ञान नहीं कि चिन्ता से कैसे दूर रहें, शीघ्र मृत्यु को पहुँच जाते हैं। – डॉ. केरेल

१३. यदि तुम्हारी आदत है तो चिन्ता करके कष्टों का आह्वान कर लो, किन्तु उसे अपने पड़ोसी को उधार मत दो। – रुडार्ड किप्लिंग

१४. यदि मनुष्य चिन्ता को तुरन्त उतारकर न फेंक दे तो फिर ऐसी स्थिति आ जाती है कि मनुष्य उसे दूर फेंकने में असमर्थ हो जाता है। – स्वेट मार्डन

१५. जितना समय हम किसी कार्य की चिन्ता में लगाते हैं यदि उतना ही समय हम उस कार्य में लगाएँ तो चिन्ता जैसी कोई चीज ही नहीं रह जाएगी। – बेरयल फिजर

१६. कार्य की अधिकता मनुष्य को नहीं मारती, वल्कि चिन्ता मारती है। – स्वेट मार्डन

* * *

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछु न चाहिए, सोई साहंसाह ॥
– कबीर

विन चाहै सव ही मिलै, चाहै कछु न मिलेंत।
वालक मुख जोरावरी, माता भाता देत ॥
– ज्ञानसार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन

१. मनुष्य का जीवन एक महानदी की भाँति है, जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में अपनी राह बना लेती है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

२. जीवन एक बाजी के समान है। हार-जीत तो हमारे हाथ नहीं है पर बाजी का खेलना हमारे हाथ में है। — जर्मी टेलर

३. जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु। — विक्टर ह्यूगो

४. खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का। — प्रेमचन्द

५. मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ लड़े। — सुभाषचन्द्र बोस

६. जीवन विकास का सिद्धांत है, स्थिर रहने का नहीं। लगातार विकसित होना स्थिर अवस्था में रहने की आज्ञा नहीं देता। — जवाहरलाल नेहरू

७. जीवन एक दर्पण है, यदि आप इसे आँखें दिखाएँगे तो यह भी वैसा ही करेगा। यह अभिवादन का उत्तर अभिवादन से देता है। — थैकरे

८. जीवन अधिकांशतः झाग और बुलबुला है; केवल दो ही चीजें चट्टान जैसी ठोस हैं; दूसरे के कष्ट में सहृदयता और अपने कष्ट में साहस। — गोर्डन

९. जीवन का एक बहुत बड़ा भ्रम यह मानना है कि वर्तमान घड़ी नाजुक है और निर्णयात्मक घड़ी नहीं है। अपने हृदय पर अंकित कर लो कि प्रत्येक घड़ी वर्ष का सर्वोत्तम दिन है। — एमर्सन

१०. साधारण जीवन में एक ही विधान है, यौवन एक भूल है, जवानी संघर्ष है और बुढ़ापा पश्चात्ताप। — डिजरायली

११. जीवन अनन्त काल के श्वेत प्रकाश को रंग-बिरंगे शीशे के गुम्बद के सदृश रंग देता है। — शैली

१२. योग्यता से व्यतीत हुए जीवन को हमें वर्ष के नहीं अपितु कर्म के अच्छे पैमाने से नापना चाहिए। — शेरीडन

१३. महत्त्व इसका नहीं है कि हम कब तक जीते हैं; महत्त्व की बात तो यह है कि हम, कैसे जीते हैं। — बेली

१४. जीवन का पहला और स्पष्ट लक्षण है विस्तार। यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो तुम्हें फैलना ही होगा। जिस क्षण तुम जीवन का विस्तार बन्द कर दोगे उसी क्षण जान लेना कि मृत्यु ने तुम्हें घेर लिया है, विपत्तियाँ तुम्हारे सामने हैं। — विवेकानन्द

१५. कोई भी व्यक्ति, जब तक कि वह प्रसन्नता से मरने को तैयार नहीं रहता—जीवन का सच्चा आनन्द नहीं ले सकता। — सेनेका

१६. एक संतुलित जीवन ही आनन्दपूर्ण होता है। सुन्दर गुणों के साथ मधुर स्वभाव का संयोग, स्पष्ट निर्णय-शक्ति तथा सामंजस्यपूर्ण कार्य-शक्ति जीवन को पूर्ण बना देती है। — स्वेट मार्डन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान

१. दान धर्म की पूर्णता और उसका श्रृंगार है। — एडीसन

२. अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर-उधर कहने से दान फलहीन हो जाता है। — मनु

३. दान देना ही आमदनी का एकमात्र द्वार है। — स्वामी रामतीर्थ

४. जरूरतमंद को स्वयं पास जाकर देना श्रेष्ठ दान है, बुलाकर देना मध्यम है, माँगने पर देना अधम है, और सेवा कराकर देना तो सर्वथा निष्फल तथा व्यर्थ है। — पराशर

५. सत्कारपूर्वक दान दो, स्वहस्त से दान दो, मन से दान दो, ठीक तरह से दोषरहित दान दो। — महात्मा बुद्ध

६. अहंभाव से दिया गया दान दीनता और विषमता पोसनेवाला और बढ़ानेवाला है। धर्म की अकिंचन भावना से दिया गया दान प्रीति और सद्भाव बढ़ायेगा। — जैनेन्द्रकुमार

७. दानी कभी दु:ख नहीं पाता, उसे कभी पाप नहीं घेरता। — ऋग्वेद

८. जो दान अपनी कीर्ति-गाथा गाने को उतावला हो उठता है, वह दान नहीं रह जाता; अपितु अहंकार एवं आडम्बरमात्र रह जाता है। — हुद्दन

९. प्रार्थना ईश्वर की तरफ आधे रास्ते तक ले जाती है, उपवास हमको उसके महल के द्वार तक पहुंचा देता है और दान से हम उसके अन्दर प्रवेश करते हैं। — कुरान

१०. जो जन दान-दक्षिणा देते हैं, वे स्वर्गलोक में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं। — ऋग्वेद

११. प्रसन्न चित्त से दिया गया थोड़ा दान भी थोड़ा नहीं होता है। — विमानवत्थु

१२. ज्यों-ज्यों धन की थैली दान में खाली होती है दिल भरता जाता है। — विक्टर ह्यूगो

१३. जैसे बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर पृथ्वी पर बरसा देते हैं वैसे ही सज्जन भी जिस वस्तु का ग्रहण करते हैं उनका दान भी करते हैं। — कालिदास

१४. जिस दान में कोई लेने का संबंध नहीं, वही है अन्तिम गति, वही है ब्रह्म का स्वरूप, वह लेते नहीं। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१५. अल्प में से भी जो दान दिया जाता है, वह सहस्रों-लाखों के दान की बराबरी करता है। — महात्मा बुद्ध

१६. दान पौरुषहीन, कर्महीन तथा पाखण्डियों का आधार है। — प्रेमचन्द

* * *

तुलसी पंछिन के पिये, घटै न सरिता-नीर।
दान दिये धन ना घटै, जो सहाय रघुबीर।।

— तुलसीदास

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।।

— कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोष–दोषी

१. दोष निकालना सुगम है, उसे अच्छा करना कठिन। —प्लूटार्क

२. दूसरों के दोष ढूंढ़-ढूंढ़कर उनकी चर्चा करते रहने से मन छोटा हो जाता है, स्वभाव संदिग्ध हो उठता है, हृदय में सरसता विल्कुल नहीं रहती। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

३. यदि किसी युवती के दोष जानने हों तो उसकी सखियों में उसकी प्रशंसा करो। —फ्रैंकलिन

४. वह आदमी कुछ नहीं कर सकता जो तव जाकर काम करने की प्रतीक्षा करता है, जव उसके किये काम में कोई दोष न निकाले। —कार्डिनल न्यूमैन

५. उस काम को जिसे तुम दूसरे व्यक्ति में बुरा समझते हो, स्वयं त्याग दो परन्तु दूसरों पर दोष मत लगाओ। —स्वामी रामतीर्थ

६. अपनी आँख में शहतीर देख पाने की अपेक्षा दूसरों की आँख में तिनका देख लेना अधिक सुगम है। —स्वामी रामतीर्थ

७. दूसरों के दोषों की चर्चा करने से अपना चित्त प्रक्षुब्ध ही होता है इसलिए उसके व्यवहार की ओर लक्ष्य न देकर अथवा उसकी चर्चा करने न वैठकर उसके प्रति उपेक्षा-दृष्टि से देखना ही श्रेयस्कर है। —स्वामी विवेकानन्द

८. दूसरों के धन का अपहरण, पर-स्त्री के साथ संभोग और अपने हितैषी सुहृदों के प्रति घोर अविश्वास—ये तीनों दोष जीव का नाश करनेवाले हैं। —वाल्मीकि

९. सबसे बड़ा दोष, मेरी राय में, किसी भी दोष का ज्ञान न होना है। —कार्लाइल

१०. दूसरे के दोष पर ध्यान देते समय हम स्वयं वहुत भले वन जाते हैं। परन्तु जव हम अपने दोषों पर ध्यान देंगे, तो अपने आपको कुटिल और कामी पाएँगे। —महात्मा गांधी

११. जव तक तुममें दूसरों के दोष ही दोष देखने की आदत मौजूद है तव तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात्कार करना अत्यन्त कठिन है। —स्वामी रामतीर्थ

१२. सभी छुपे हुए दोषों का उपाय ढूंढ़ना कठिन होता है। —महात्मा गांधी

१३. निन्यानवे प्रतिशत अवस्थाओं में कोई भी मनुष्य स्वयं को दोषी नहीं ठहराता, चाहे उसकी कितनी ही भारी भूल क्यों न हो। —डेल कारनेगी

१४. दोषभरी बात यदि यथार्थ है तव भी नहीं कहना चाहिए जैसे अन्धे को अंधा कहने पर तकरार हो जाती है। —डिजरायली

१५. जव आपके अपने द्वार की सीढ़ियाँ मैली हैं, तो अपने पड़ोसी की छत पर पड़ी हुई हिम की शिकायत न कीजिए। —कन्फ्यूशस

१६. गुरु का भी दोष कह देना चाहिए। —स्वामी रामतीर्थ

* * *

अहह, सच कहा है पंडितों ने निशेष।
सब गुण हरता है एक भी दोष—लेश॥

—मैथिलीशरण गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोस्त–दोस्ती (मित्र–मित्रता)

१. सच्चे दोस्त वे हैं जिनकी देह दो पर आत्मा एक होती है। –अरस्तू

२. विदेश में विद्या मित्र होती है, घर में पत्नी मित्र होती है, रोगी का मित्र औषधि और मृतक का मित्र धर्म है। –चाणक्य

३. दोस्ती खुशी को दूना करके और दुःख को बाँटकर खुशी बढ़ाती है तथा मुसीबत कम करती है। –एडीसन

४. ज्ञानवान मित्र ही जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। –यूरीपिडीज

५. मित्रता शनैःशनैः उत्पन्न करो; किन्तु जब कर लो तो उसमें दृढ़ और अचल रहो। –सुकरात

६. मुंह के सामने मीठी बातें करने और पीठ पीछे छुरी चलानेवाले मित्र को दुधमुंहे विषभरे घड़े की तरह छोड़ दो। –हितोपदेश

७. यदि हमारा कोई सच्चा मित्र न हो तो विश्व निर्जन वन के समान प्रतीत होगा। –बेकन

८. सच्चे मित्र को दोनों हाथों से पकड़कर रखो। –नाइजिरियन कहावत

९. विद्या, शूरवीरता, दक्षता, बल और धैर्य ये पाँच मनुष्य के स्वाभाविक मित्र हैं। बुद्धिमान लोग सर्वदा इनके सहवास में रहते हैं। –वेदव्यास

१०. तीन विश्वासी मित्र होते हैं–वृद्धा पत्नी, बूढ़ा कुत्ता और नकद धन। –फ्रैंकलिन

११. जो मित्रता में से आदर निकाल देता है, वह मित्रता का सबसे बड़ा आभूषण उतार देता है। –सिसरो

१२. मित्र धनी हो या निर्धन, सुखी हो या दुःखी, अथवा निर्दोष हो या सदोष; वह हमारे लिए सबसे बड़ा सहायक होता है। –वाल्मीकि

१३. मिलने पर मित्र का सम्मान करो, पीठ पीछे उसकी प्रशंसा करो और आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करो। –अरस्तू

१४. शस्त्र राहगीर का मित्र है, जननी स्व-घर का मित्र है और अपने किये पुण्यकर्म ही परलोक के मित्र हैं। –महात्मा बुद्ध

१५. सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। –रामचन्द्र शुक्ल

१६. यदि दृढ़ मित्रता चाहते हो तो मित्र से बहस करना, उधार लेना-देना और उसकी स्त्री से बातचीत करना छोड़ दो। यही तीन बातें बिगाड़ पैदा करती हैं। –चाणक्य

* * *

हृदय खोलकर मिलनेवाले बड़े भाग्य से मिलते हैं,
मिल जाता है जिस प्राणी को सत्य प्रेम मय मित्र कहीं।
निराधार भवसिंधु बीच वह कर्णधार को पाता है,
प्रेम-नाव लेकर जो उसको सचमुच पार लगाता है॥

–जयशंकर प्रसाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन-धनी

१. धन राष्ट्र का जीवन-रक्त है। —स्विफ्ट

२. धन अधिक संग्रह में नहीं अपितु थोड़ी आवश्यकताएँ होने में है। —इपक्यूरस

३. धन से सद्‌गुण नहीं उत्पन्न होते, अपितु सद्‌गुणों से ही धन एवं अन्योन्य इच्छित वस्तुएँ प्राप्त होती है। —कन्फ्यूशस

४. धन उत्तम कर्मों से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता से बढ़ता है, चतुराई से फूलता-फलता है और संयम से सुरक्षित होता है। —विदुर

५. धन के पर होते हैं, कभी-कभी वे स्वयं उड़ते हैं और कभी-कभी अधिक लाने के लिए उन्हें उड़ाना पड़ता है। —बेकन

६. धन अथाह समुद्र है जिसमें इज्जत, अन्तःकरण और सत्य डूब सकते हैं। —कोजले

७. जब जेब में पैसे होते हैं तो तुम बुद्धिमान और सुन्दर लगते हो तथा उस समय तुम अच्छा गाते भी हो। —यिडिश कहावत

८. पैसा अच्छा सेवक है किन्तु बुरा स्वामी है। —बेकन

९. मुसीबत के लिए धन को बचाना चाहिए, धन से औरत को बचाना चाहिए, स्त्री और धन से सदैव अपने को बचाना चाहिए। —चाणक्य

१०. पैसे को अपना भगवान मानिए, वह शैतान की तरह आपको भ्रष्ट कर देगा। —फील्डिंग

११. पैसा आपका सेवक है, यदि आप उसका उपयोग जानते हैं; वह आपका स्वामी है, यदि आप उसका उपयोग नहीं जानते। —होरेस

१२. धन का ही यह प्रभाव है कि अपूजनीय भी पूजनीय, अगमनीय भी गमनीय है और अवन्दनीय भी वन्दनीय हो जाता है। —पंचतंत्र

१३. कोई इन्सान दो आदमियों की एकसाथ खिदमत नहीं कर सकता। चाहे प्रभु की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। —बाइबिल

१४. पैसेवाले पैसे की कदर क्या जानें? पैसे की कदर तब होती है, जब हाथ खाली हो जाता है। तब आदमी एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ता है। —प्रेमचन्द

१५. जो ज्यादा दौलतमंद है वही ज्यादा मोहताज है। —शेख सादी

१६. फुटबाल की तरह धन का खेल होना चाहिए। गेंद को कोई अपने पास नहीं रखता। वह जिसके पास पहुँचती है वही उसे फेंक देता है। पैसे को इस तरह फेंकते जाइए तो समाज में उसका प्रवाह बहता रहेगा और समाज का आरोग्य कायम रहेगा। —विनोबा भावे

* * *

गोधन, गजधन, वाजिधन, और रतन-धन खान।
जब आवै संतोषधन, सब धन धूरि समान॥

—कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म

१. धर्म आवश्यक है उसी तरह जैसे मकान के लिए नींव आवश्यक है। – जैनेन्द्र कुमार

२. धैर्य, क्षमा, दया, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, तत्त्वज्ञान, आत्मज्ञान, सत्य और अक्रोध, ये दस धर्म के लक्षण हैं। – मनु

३. धर्म मनुष्य में विद्यमान जन्मजात शक्तियों की अभिव्यक्ति मात्र है। – विवेकानंद

४. धर्म की शक्ति ही अनेक जीवन की शक्ति है, धर्म की दृष्टि ही जीवन की दृष्टि है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

५. धर्म हमारी रक्षा और कल्याण के लिए है। – प्रेमचन्द

६. धर्म का उद्देश्य है कि मनुष्य के चरित्र में अटल बल प्राप्त हो। – स्वामी रामतीर्थ

७. धर्म को रोका नहीं जा सकता, अन्तरात्मा को दबाया नहीं जा सकता। धर्म तो अन्तरात्मा की चीज है और अन्तरात्मा है स्वतन्त्र, इसलिए पूजा और धर्म स्वतंत्र हैं। – स्टेलिन

८. धर्म तो मानव-समाज के लिए अफीम है। – कार्ल मार्क्स

९. धर्म का दान सब दानों से बढ़कर है। धर्म का रस सब रसों से बढ़कर है। – महात्मा बुद्ध

१०. भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रों से नहीं, पुत्रियों के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियो ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कब का नष्ट हो चुका होता। – महर्षि दयानन्द सरस्वती

११. दो धर्मों का कभी भी झगड़ा नहीं होता। सब धर्मों का अधर्मों से ही झगड़ा है। – विनोबा भावे

१२. प्रकृति का धर्म है बंधन और आत्मा का धर्म है मुक्ति। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१३. अधर्म भी धर्म का एक रूप ही है, एक पहलू ही है। अन्याय, अधर्म और अक्षमता को क्षमा करके प्रश्रय देना धर्म का ही अनुशासन है। – शरच्चन्द्र

१४. जो चीज विकार को मिटा सके, राग-द्वेष को कम कर सके, जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे वही धर्म की शिक्षा है। – महात्मा गांधी

१५. सत्य और पवित्रता के साथ ईश्वर की सेवा करना और जीवन की सभी घटनाओं में उसकी आज्ञाओं का श्रद्धा के साथ पालन करना ही यथार्थ धर्म है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

१६. न्याययुक्त व्यवहार करना, सौन्दर्य से प्रेम करना तथा सत्य की भावना को हृदय में धारण करके विनयशील बने रहना ही सबसे बड़ा धर्म है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

* * *

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥

– तुलसीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धीरज (धैर्य)

१. जिसके पास धैर्य हैं, वह जो कुछ इच्छा करता है, प्राप्त कर सकता है। —फ्रैंकलिन

२. धीरज सारे आनन्दों और शक्तियों का मूल है। —जॉन रस्किन

३. संकट के समय धैर्य धारण करना मानो आधी लड़ाई जीत लेना है। —प्लाटस

४. धैर्य कड़ुवा होता है पर उसका फल मीठा होता है। —रूसो

५. नीतिज्ञ मनुष्य चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, धन चाहे आये या बिल्कुल चला जाए, मृत्यु चाहे आज ही हो जाए या एक युग के पश्चात्, पर धैर्यवान न्याययुक्त राह से कभी पग नहीं हटाते। —भर्तृहरि

६. शत्रु का लोहा गरम भले ही हो जाय पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है। —सरदार पटेल

७. प्रकृति का अनुसरण करो–धैर्य उसका रहस्य है। —एमर्सन

८. धैर्य शौर्य का अति उत्तम, मूल्यवान और दुष्प्राप्य अंग है। — जॉन रस्किन

९. धैर्यहीन मनुष्य तेलहीन दीपक की तरह है। —एन्ड्रूस सेगोविआ

१०. धैर्य एक कड़ुवा पौधा है परन्तु उस पर फल मीठे आते हैं। — जर्मन कहावत

११. धैर्य आशा करने की कला है। — वाउवेनराग्युइस

१२. धैर्य संतोष की कुंजी है। —मोहम्मद साहब

१३. धैर्य ऐसी चीज है जिसे तुम अपने से पीछेवाले ड्राइवर में देखकर उसकी प्रशंसा करते हो तथा अपने से आगेवाले ड्राइवर में पाकर तुम उसे धिक्कारते हो। — एम. मकलीअरी

१४. चाहे धैर्य थकी घोड़ी हो परन्तु फिर भी वह धीरे-धीरे चलेगी अवश्य। — शेक्सपियर

१५. धीरज प्रतिभा का आवश्यक अंग है। — डिजरायली

१६. जिसे धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता कामयाबी उसकी दासी है। —दयानन्द सरस्वती

* * *

आकाश धरा से एक रात बोला यह,
'तेरी छाती पर बहुत बोझ रहता है।'
धरती बोली, 'तू रो देता पल भर में,
सामर्थ्यवान् ही सब दुःख सुख सहता है ॥

—उदयशंकर भट्ट

कबिरा धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूक एक के कारने, स्वान घरै घर जाय ॥

—कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्येय (लक्ष्य)

१. महान ध्येय महान मस्तिष्क की जननी है। — इमन्स

२. ध्येय जितना महान होता है, उसका रास्ता उतना ही लम्बा और बीहड़ होता है। — साने गुरुजी

३. अपने जीवन का ध्येय बनाओ और इसके बाद अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति जो भगवान ने तुम्हें दी है, उसमें लगा दो। — कार्लाइल

४. असफलता नहीं अपितु निकृष्ट ध्येय ही अपराध है। — जे. आर. लावेल

५. यदि मैं सूर्य को लक्ष्य बनाऊँ तो सम्भवतः नक्षत्र को भेद सकूँ। — बर्नन

६. उन्नत होना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है। — अथर्ववेद

७. जो अपने लक्ष्य के प्रति पागल हो गया है, उसे ही प्रकाश का दर्शन होता है। जो थोड़ा इधर, थोड़ा उधर हाथ मारते हैं, वे कोई लक्ष्य पूर्ण नहीं कर पाते। वे कुछ क्षणों के लिए बड़ा जोश दिखाते हैं; किन्तु वह शीघ्र ठंडा हो जाता है। — विवेकानन्द

८. कर्मशक्ति तथा इच्छाशक्ति प्राप्त करो, कठोर परिश्रम करो और तुम निश्चित लक्ष्य पर पहुँच जाओगे। — विवेकानन्द

९. आत्मा में परमात्मा का साक्षात्कार प्राप्त करना ही जीवन का चरम लक्ष्य है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१०. समीर ध्येयरहित मानव की मदद नहीं करता। — मानटेन

११. हमारा ध्येय सत्य होना चाहिए, न कि सुख। — सुकरात

१२. लक्ष्य की सिद्धि अन्याय तथा अनीति से नहीं, सत्य और धर्म से ही हो सकती है। — रामकृष्ण परमहंस

१३. लक्ष्य को ही अपना जीवन-कार्य समझो। हर क्षण उसी का चिन्तन करो, उसी का स्वप्न देखो। उसी के सहारे जीवित रहो। — विवेकानन्द

१४. मनुष्य देवत्व का अंग और संसार में उसका प्रतिनिधि है और मानव-जीवन का अंतिम लक्ष्य अपने में देवत्व को पहचानना और उसे प्राप्त करना है। — स्वामी शंकराचार्य

१५. महान ध्येय का मौन में ही सृजन होता है। — साने गुरुजी

१६. ध्येयहीन जीवन माँझी बिना की पतवार के समान है। — एमर्सन

* * *

अन्तिम लक्ष्य बना देता है, पतित साधनों को भी पावन,
यह सिद्धांत निपट मिथ्या है, न लें सहारा इसका जग जन;
जो साधन नर के शोणित से, लथ-पथ वे कब हैं श्रेयस्कर ?
आओ जग-जन, आज त्याग दें, यह सिद्धांत कुरूप घृणाभर।

— बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्रता

१. नम्रता पत्थर को भी मोम कर देती है। — प्रेमचन्द
२. नम्रता का असर दूर तक जाता है और उसमें कुछ भी खर्च नहीं होता। — स्माइल्स
३. नम्रता सारे सद्‌गुणों का दृढ़ स्तम्भ है। — कन्फ्यूशस
४. मेरा विश्वास है कि वास्तविक महान पुरुष की पहली पहचान उसकी नम्रता है। — रस्किन
५. अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है। — महात्मा बुद्ध
६. विनम्रता का अर्थ है, दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा आप अपने साथ किया जाना पसंद करते हैं। — चेस्टरफील्ड
७. हम महानता के निकटतम होते हैं, जब हम नम्रता में महान होते हैं। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर
८. जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते। नम्रता का अर्थ है अहंभाव का आत्यन्तिक क्षय। — महात्मा गांधी
९. गर्ववश देवता दानव वन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता। — आगस्टाइन
१०. अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निन्दनीय और कुछ नहीं है। — मारकस औरेलियस
११. कष्ट और क्षति सहने के पश्चात् मनुष्य अधिक विनम्र और ज्ञानी हो जाता है। — फ्रैंकलिन
१२. उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेक के ज्यादा नजदीक होते हैं। — वर्ड्सवर्थ
१३. जहाँ नम्रता से काम निकल आये वहाँ उग्रता नहीं दिखानी चाहिए। — प्रेमचन्द
१४. ईश्वर के सम्मुख दान सहस्रों पापों को भी ढक लेता है। मानव के सम्मुख नम्रता बुराइयों को छिपा लेती है। — ग्रेंविलो
१५. बड़ों के प्रति नम्रता कर्तव्य है, समवयस्क के प्रति विनय की सूचक है, अनुजों के प्रति कुलीनता की द्योतक एवं सबके प्रति सुरक्षा है। — सर टी. मूर
१६. आत्म-सम्मान की भावना ही नम्रता की औषधि है। — डिजरायली

* * *

अहं को त्याग अणु से मित्रता कर लो;
गगन को भूल जग को अंक में भर लो;
इसी में हित निहित शिखरो तुम्हारा है;
झुको, झुककर धरा की वन्दना कर लो।
— जगदीश वाजपेयी

मानव की लघुता भली, नहीं देव-सा मान।
लघुता में ही मनुज की, गुरुता का गुन-गान॥
— श्रीमन्नारायण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारी

१. नारी केवल मांसपिंड की संज्ञा नहीं है । आदिम काल से आज तक विकास-पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर, और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर, मानवी ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है । — महादेवी वर्मा

२. नारी शांति की प्रतिमा है, इसे उच्च पद से नीचे गिराना केवल जंगलीपन है । — रफोडियस

३. नारी वह मधुर सरिता है जिसमें प्रवहमान होकर मनुष्य अपनी चिन्ताओं और दुःखों से त्राण पाता है । — शरण

४. नारी के जीवन का संतोष ही स्वर्ण-श्री का प्रतीक है । — डॉ. रामकुमार वर्मा

५. नारी नर की सहचरी, उसके धर्म की रक्षक, उसकी गृहलक्ष्मी तथा उसे देवत्व तक पहुँचानेवाली साधिका है । — डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

६. नारी सब कुछ कर सकती है, लेकिन अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती । — सुदर्शन

७. नारी की चरम सार्थकता मातृत्व में है । — शरच्चन्द्र

८. जो नारी अपने पति तथा पुत्रों को सदैव सानन्द रखती है, उसके समक्ष संसार की महारानी का वैभव भी तुच्छ है । — गोल्डस्मिथ

९. प्रेम किस प्रकार किया जाता है, इसे केवल नारियाँ ही जानती हैं । — मोपांसा

१०. नारी यौवनकाल में गृह-देवी, मध्यकाल में सच्चा साथी और वृद्धावस्था में परिचारिका का काम देती है । — बेकन

११. नारी की आँखों में कानून से भी अधिक शक्ति होती है और किसी भी तर्क से अधिक उसके अश्रु प्रभावशाली होते हैं । — सैविली

१२. नारी बड़े से बड़ा दुःख भी होठों पर मुस्कराहट लेकर सह लेती है । — जयशंकर प्रसाद

१३. कौन-सी ऊँचाई है जहाँ नारी चढ़ नहीं सकती ? कौन-सा ऐसा स्थान है जहाँ पर वह पहुँची नहीं ? हजारों अपराध करो, वह क्षमा कर देती है । जब किसी बात पर अड़ जाये तो संसार की कोई भी शक्ति उसे रोक नहीं सकती । — कार्लेटन

१४. विश्व में कोई वस्तु इतनी मनोहर नहीं, जितनी कि सुशील और सुन्दर नारी । — हण्ट

१५. नारी के बिना पुरुष की बाल्यावस्था असहाय है, युवावस्था सुखरहित है और वृद्धावस्था सान्त्वना देनेवाले सच्चे और वफादार साथी से रहित है । — जौन

१६. जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता भी प्रसन्न रहते हैं । — मनु

* * *

अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ।।

— मैथिलीशरण गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निराशा

१. निराशा निर्बलता का चिह्न है। — स्वामी रामतीर्थ

२. निराशा जब चरम सीमा पर पहुँच जाती है तब हमारी जीभ बन्द हो जाती है। — सुदर्शन

३. निराशा आशा के पीछे-पीछे चलती है। — एल. ई. लैमडन

४. निराशा स्वर्ग की सीलन है, जैसे प्रसन्नता स्वर्ग की शांति। — जॉन डोम

५. निराशा में प्रतीक्षा अंधे की लाठी है। — प्रेमचन्द

६. अपने अहं का विस्तार करना ही निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है। — टालस्टाय

७. जीवन में निराशा से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है। — विवेकानन्द

८. निराशा चारों ओर अन्धकार के रूप में दिखाई देती है। — जैनेन्द्रकुमार

९. निराशा सम्भव को असम्भव बना देती है। — जयशंकर प्रसाद

१०. निराशा से जीवन के बहुमूल्य तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। इससे विजय के बहुत से अवसर खो जाते हैं। — स्वेट मार्डन

११. निराशा बेकार बात है और आत्महत्या बिल्कुल अनुचित। आदमी चाहे कितनी भी ठोकरें खाए, यदि वह भगवान की अभीप्सा करे तो उसकी कृपा हमेशा उसके साथ रहेगी और उसे मुश्किलों में से उबार लेगी। — श्री अरविन्द

१२. मनुष्य के लिए निराशा के समान दूसरा पाप नहीं है। इसलिए मनुष्य को इस पापरूपिणी निराशा को समूल हटाकर आशावादी बनना चाहिए। — हितोपदेश

१३. मानव की उन्नति तथा अवनति उसकी आशाओं तथा निराशाओं पर आधारित होती हैं। — लिंकन

१४. जीवन में आशा तथा निराशा धूप-छाँव के समान होते हैं। — एमर्सन

१५. निराशा मूर्खों का निष्कर्ष है। — डिजरायली

१६. निराशावाद भयंकर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है। — स्वेट मार्डन

* * *

मनुष्य चाहे जितना सुखी रहे,
अनन्त चाहे उसका प्रमोद हो।
समाप्त आशा उसकी हुई जभी,
जरा तभी आकर कंठ दाबती।

— अनूप

रोते हैं हँसने को, साथी, सोते हम जगने को।
मरते हैं जीवन को, भाई, गिरते हम उठने को॥

— श्रीमन्नारायण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमात्मा (ईश्वर, प्रभु)

१. परमात्मा सच्चाई है और रोशनी उसकी छाया। – प्लेटो

२. परमात्मा अपने प्रेम में परिमित को ग्रहण करता है और मनुष्य अनन्त को। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

३. परमात्मा ही सबके नेत्रों से दूसरों की ओर देखता है। – गुरु अर्जुनदेव

४. ईश्वर जिसे प्यार करता है, उसे रगड़कर साफ़ करता है। – इंजील

५. ईश्वर न कावा में है न काशी में है। वह तो घर-घर में व्याप्त है – हर दिल में मौजूद है। – महात्मा गांधी

६. ईश्वर एक वृत्त है, जिसका केन्द्र सर्वत्र है, किन्तु वृत्त-रेखा कहीं नहीं। – सेंट आगस्टन

७. जिस तरह पानी को कोई जल, कोई आव, कोई वाटर कहते हैं, उसी तरह एक ही सच्चिदानन्द परमेश्वर को कोई अल्लाह, कोई हरि, कोई गॉड कहकर पुकारते हैं। – रामकृष्ण परमहंस

८. ईश्वर को आँखों से कोई देख नहीं सकता, किन्तु हममें से हर एक मन को पवित्र करके विमल बुद्धि से ईश्वर को देख सकता है। – श्वेताश्वतरोपनिषद्

९. उस अल्लाह की स्तुति करनी चाहिए जो समस्त संसार का चालक, दयालु, उदार और अंतिम निर्णय के समय न्यायाधीश भी है। – कुरान

१०. परिभाषा करना ही ईश्वर को अस्वीकार करना है। सीमित वस्तु की ही परिभाषा हो सकती है। अनन्त की क्या परिभाषा हो! यदि ईश्वर की परिभाषा करते हैं तो अनन्त को मापते हैं, मन के दायरे के अन्दर उन्हें सीमित करते हैं। ईश्वर स्थूल मन की पहुँच के परे है, किन्तु शुद्ध, सूक्ष्म, एकाग्र मन से ध्यान में उनका अनुभव किया जा सकता है। – स्वामी शिवानन्द

११. यदि ईश्वर का अस्तित्व न होता तो उसके आविष्कार की आवश्यकता होती। – वालटेयर

१२. प्रकृति बहुत बारीक आवरण है, सर्वव्यापी ईश्वर का प्रताप सब ओर से फूट पड़ता है। – एमर्सन

१३. ईश्वर की कोई बौद्धिक परिभाषा नहीं दी जा सकती। हाँ, उसका आत्मा के सहारे अनुभव किया जा सकता है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

१४. ईश्वर बड़े-बड़े साम्राज्यों से विमुख हो जाता है; किन्तु छोटे-छोटे पुष्पों से कभी खिन्न नहीं होता। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१५. हम जितना ही ईश्वर के समीप पहुँचते जाते हैं, उतना ही मनुष्य एवं ईश्वर के स्वरूप में एकरूपता बढ़ती जाती है। – बाइबिल

१६. प्रभु है और सर्वत्र है, इस तथ्य का हमारे ज्ञान में अभाव नहीं है; किन्तु हम अपने दैनिक जीवन में इस तरह आचरण करते हैं कि वह कहीं है ही नहीं। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

* * *

जाको राखै साइयाँ, मार सके ना कोय।
वाल न बांका करि सकै, जो जग बैरी होय ॥
– कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाप-पुण्य

१. पाप एक प्रकार का अँधेरा है जो ज्ञान का प्रकाश होते ही मिट जाता है। – कालिदास

२. असफलता नहीं अपितु निकृष्ट ध्येय ही पाप है। – टेनीसन

३. पाप करने का अर्थ यह नहीं कि जब वह आचरण में आ जाए तब ही उसकी गिनती पाप में हुई। पाप तो जब हमारी दृष्टि में आ गया, विचार में आ गया वह हमसे हो गया। – महात्मा गांधी

४. पाप की स्वीकृति मुक्ति का श्रीगणेश है। – ल्यूथर

५. किसी कर्म को पाप नहीं कहा जा सकता, वह अपने नग्न रूप में पूर्ण है, पवित्र है। युद्ध में हत्या करना धर्म है, परन्तु दूसरे स्थल पर अधर्म। – जयशंकर प्रसाद

६. मनोभावों से ही पाप माना जाता है, वचन या कर्म से नहीं। पत्नी और पुत्री के आलिंगन में भाव की ही भिन्नता होती है। – शरण

७. शरीर से तभी पाप होते हैं, जबकि पाप मन में होते हैं। छोटे बच्चे के मन में काम नहीं होता, वह युवतियों के वक्षस्थल पर खेलता है, उसके शरीर में कोई विकार नहीं होता। – हितोपदेश

८. पाप में पड़नेवाला मानव होता है, जो पाप पर पछताता है वह सज्जन है, जो पाप पर गर्व करता है वह शैतान है। – थामस फुलर

९. पाप अग्नि का वह कुण्ड है जो आदर और मान, साहस और धैर्य को क्षणभर में जलाकर भस्म कर देता है। – प्रेमचन्द

१०. जिस तरह आग आग का शमन नहीं कर सकती उसी तरह पाप पाप का शमन नहीं कर सकता। – टालस्टाय

११. पाप इसलिए दुःखद नहीं है कि वह मना है, बल्कि इसलिए मना है कि वह दुःखद है। – फ्रैंकलिन

१२. कोई भी कार्य अपने आप पाप या पुण्य नहीं हो सकता, ठीक जिस प्रकार बिन्दु या शून्य का स्वतः कोई मूल्य नहीं होता। – स्वामी रामतीर्थ

१३. शरीर को रोगी या दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है। – लोकमान्य तिलक

१४. जैसे धन का नाश होने पर सगे-सम्बन्धी छोड़ देते हैं वैसे ही पुण्य क्षीण हो जाने पर देव भी मानव को स्वर्ग से गिरा देते हैं। – महाभारत

१५. पाप का फल दुःख नहीं, किन्तु एक दूसरा पाप है। मनुष्य जब एक बार पाप के नागपाश में फँसता है, तब वह उसी में और भी लिपटता जाता है। – जयशंकर प्रसाद

१६. पुण्यात्मा जहाँ कहीं भी जाता है, सब जगह सफलता एवं सुख पाता है। – महात्मा बुद्ध

* * *

पापी पाप न कीजिए, न्यारा रहिए आप।
करणी आपो आपरी, कुण बेटो कुण बाप ॥

– बांकीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक (ग्रंथ)

१. पुस्तकें मन के लिए सावुन का कार्य करती हैं। — महात्मा गांधी

२. पुस्तकों का संकलन ही आज के युग का वास्तविक विद्यालय है। — कार्लाइल

३. पुस्तक एक उपवन-एक फलवाटिका, एक भण्डार, एक प्रीतिभोज, एक संगिनी होती है, वैसे ही एक सलाहकार भी। — बीचर

४. पुस्तकें जाग्रत देवता हैं, उनकी सेवा करके तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है। — रामप्रताप त्रिपाठी

५. कुछ पुस्तकें चलने मात्र की होती हैं, दूसरी निगाह डालने योग्य और कुछ ऐसी होती हैं जिन्हें चवाया और पचाया जा सके। — बेकन

६. पुस्तकें प्रकाश-गृह हैं जो समय के विशाल सागर में खड़ी की गई हैं। — ई. पी. विपिल

७. विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। — बर्नार्ड शॉ

८. पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं जो संतों एवं शूरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं। — गिब्बन

९. वुरी पुस्तकों का पढ़ना जहर पीने के समान है। — टालस्टाय

१०. ग्रंथरहित कक्ष आत्मारहित देह के सदृश है। — सिसरो

११. ग्रंथ ऐसे अध्यापक हैं जो विना बेंत मारे, विना कटु शब्द एवं क्रोध के, विना वस्त्र और धन के हमें शिक्षा प्रदान करते हैं। — रिचार्ड डी. बरी

१२. पुराने वस्त्र धारण कर नई पुस्तकें खरीदिए। — प्रस्टिन फिल्रस

१३. विश्व एक महान पुस्तक है जिसमें वे लोग जो कभी घर से बाहर नहीं निकलते केवल एक पृष्ठ पढ़ पाते हैं। — ऑगस्टाइन

१४. वह पुस्तक जो बन्द रखी है, वह केवल कागजों के ढेर के समान है। — चीनी कहावत

१५. विना ग्रंथ के भगवान मौन है, न्याय निद्रित है, प्राकृतिक विज्ञान स्तब्ध है, दर्शन लँगड़ा है, शब्द गूँगे हैं और सभी वस्तुएँ पूर्ण अंधकार में हैं। — बायोलिन

१६. मैं नरक में भी अच्छी पुस्तकों का स्वागत करूँगा, क्योंकि उनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी वहीं स्वर्ग बन जायेगा। — लोकमान्य तिलक

* * *

वह पुस्तक किस काम की, जिस की माँग न होय।
वन में नाचा मोर है, देख सकै ना कोय ॥

— मेलाराम

मृत हो कि जीवित जाति का साहित्य जीवन-चित्र है।
यह भ्रष्ट है तो सिद्ध फिर वह जाति भी अपवित्र है ॥

— मैथिलीशरण गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रजातंत्र (लोकतंत्र)

१. लोकतंत्र अर्थात् लोगों की, लोगों के लिए तथा लोगों के द्वारा चलाई जानेवाली सरकार।
— लिंकन

२. लोकतंत्र सर्वसम्मति से माने गए सुझाव का वह केन्द्रबिन्दु है जिसे चारों तरफ से व्यक्तिगत मन्तव्यों ने घेर रखा हो। — जेम्स कोनण्ट

३. लोकतंत्र स्वयं को अनुशासन में रखने की कला है जिससे दूसरों को उसे अनुशासन में न रखना पड़े। — जोर्ज क्लेमेनशेन

४. एक स्वतंत्र राष्ट्र में प्रजातंत्र को कार्यरूप में परिणत करने के लिए पहली शर्त यह है कि उसके कानूनों का पालन हो, चाहे हम उन्हें पसंन्द करें या न करें।
— डॉ. कैलासनाथ काटजू

५. प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातंत्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धान्त है।
— राजगोपालाचारी

६. मैं प्रजातंत्र में इसलिए विश्वास करता हूँ कि वह प्रत्येक मनुष्य की शक्ति को उन्मुक्त करता है। — वुडरो विल्सन

७. प्रजातंत्र का अर्थ मैं यह समझता हूँ कि इसमें नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिले। — महात्मा गांधी

८. प्रजातंत्र का अपना संगठन और शासन होना चाहिए, परन्तु व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही उसका प्राण है। — सी. ई. ह्यूजेज

९. प्रजातंत्र का स्नेह समानता का स्नेह है। — माण्टेस्क्यू

१०. प्रजातंत्र का यह अर्थ नहीं है कि जितने अच्छे तुम हो उतना ही अच्छा मैं हूँ, वरन् तुम उतने ही अच्छे हो जितना अच्छा मैं हूँ। — थेडोर पार्कर

११. प्रजातंत्र का रहस्य यान्त्रिक विधि से किसी रीति को बदल देने में नहीं है। इसमें हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता है। — महात्मा गांधी

१२. प्रजातंत्र ने साधारण श्रमिक को पहले से कहीं अधिक गौरव प्रदान किया है।
— सिनेक्लेयर लुई

१३. वही राष्ट्र सच्चा लोकतन्त्रात्मक है, जो अपने कार्यों को बिना हस्तक्षेप के सुचारु और सक्रिय रूप से चलाता है। — महात्मा गांधी

१४. लोकतंत्र इस धारणा पर आधारित है कि साधारण लोगों में असाधारण सम्भावनाएँ होती हैं। — हैरी एमर्सन फास्डिक

१५. बहुमत ही लोकतंत्र की सच्ची कसौटी नहीं है। सच्चा लोकतंत्र लोगों की वृत्ति और अभिलाषाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाले थोड़े व्यक्तियों से असंगत नहीं है।
— महात्मा गांधी

१६. प्रजातंत्रीय और तानाशाही शासन में अन्तर नेताओं के अभाव में नहीं है अपितु नेताओं को, बिना उनकी हत्या किये हुए बदल देने में है। शांतिपूर्वक सरकार बदल देने की शक्ति प्रजातंत्र की आवश्यक शर्त है। — लार्ड बिवरेज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिभा

१. प्रतिभा लगातार दुःख सहने में है। —लोंगफेलो

२. प्रतिभा एक प्रकार का आचरण है और आचरण भी एक प्रकार का आवरण है। —नित्शे

३. प्रतिभा के माने हैं बुद्धि में नयी-नयी कोपलें फूटते रहना। नयी कल्पना, नया उत्साह, नयी खोज, नयी स्फूर्ति—ये सब प्रतिभा के लक्षण हैं। —विनोबा भावे

४. प्रतिभा की शक्ति पर स्वच्छन्द वातावरण में स्वतंत्रतापूर्वक साँस ली जा सकती है। —जे. एस. मिल

५. प्रतिभा में जो सबसे अच्छी बात होती है उसे वह सबसे पहले दे देती है और दूरदर्शिता सबसे बाद में देती है। —लेवोटर

६. प्रतिभा जन्मजात होती है, वह सिखायी नहीं जाती। —ड्राइडेन

७. प्रतिभा के साथ जब शुभ निष्ठा एवं लगन का सामंजस्य हो जाता है तो व्यक्ति के गुण कस्तूरी की गंध में बोलने लगते हैं। —ऋग्वेद

८. ऐसी कोई महान प्रतिभा नहीं है जिसमें लगन का सम्मिश्रण न हो। —अरस्तू

९. धीरज प्रतिभा का आवश्यक अंग है। —डिजरायली

१०. प्रतिभा वह शक्ति है जो मानवीय चक्षु में चकाचौंध पैदा कर देती है, गुप्त रूप से सिर्फ कठिन श्रम का नाम है। —आस्टिन

११. प्रतिभा एक प्रतिशत प्रेरणा और निन्यानवे प्रतिशत श्रम है। —टामस ए. एडिसन

१२. प्रतिभा अपनी राह स्वयं निर्धारित कर लेती है और अपना दीप स्वयं ले चलती है। —विलमट

१३. प्रतिभावान व्यक्ति यदि नष्ट होता है तो बहुधा अपने ही द्वारा नष्ट होता है। —जानसन

१४. प्रतिभा अपने प्रति अडिग ईमानदारी को कहते हैं। —जैनेन्द्रकुमार

१५. यदि किसी असाधारण प्रतिभावाले मनुष्य से हमारा सामना हो, तो हमें उससे पूछना चाहिए कि वह कौन-सी पुस्तकें पढ़ता है। —एमर्सन

१६. सच्चाई के प्रति स्नेह ही प्रतिभा की पहली और आखिरी माँग है। —गेटे

* * *

कैसे समझोगे कि कौन प्रतिभाशाली है ?
प्रतिभा के लक्षण अनेक हैं, किन्तु, कभी जब
सभी गधे जब एक व्यक्ति पर लात चलायें,
अजब नहीं, वह व्यक्ति महा प्रतिभाशाली हो।

— रामधारीसिंह 'दिनकर'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रशंसा

१. प्रशंसा अच्छे गुणों की छाया है, परन्तु जिन गुणों की वह छाया है उन्हीं के अनुसार उसकी योग्यता भी होती है। —बेकन

२. मानव-प्रकृति में सबसे गहरा नियम प्रशंसा प्राप्त करने की लालसा है। —विलियम जेम्स

३. हर इंसान प्रशंसा चाहता है। —लिंकन

४. प्रशंसा प्रार्थना से अधिक दिव्य है; प्रार्थना स्वर्ग की राह दर्शाती है, प्रशंसा वहाँ पहले से ही मौजूद रहती है। —यंग

५. मानव के अन्दर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास प्रशंसा तथा प्रोत्साहन के द्वारा किया जा सकता है। —चार्ल्स श्वेव

६. किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त फजूल में न गवांओ, उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो। —कार्ल मार्क्स

७. प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है। —टामस मूर

८. इससे ज्यादा कोई प्रशंसा क्या करेगा जो यह कहे कि अकेले तुम ही तुम हो। —शेक्सपियर

९. हम प्रशंसा, आशा और स्नेह से जीते हैं। —वर्ड्सवर्थ

१०. प्रशंसा वहाँ आरम्भ होती है जहाँ परिचय समाप्त होता है। —एस. जानसन

११. आप हर इंसान का चरित्र बता सकते हैं, यदि आप देखें कि वह प्रशंसा से कैसा प्रभावित होता है। —सेनेका

१२. अयोग्य व्यक्तियों की प्रशंसा छिपे हुए व्यंग्य के समान होती है। —ब्राडहर्स्ट

१३. लोक-प्रशंसा प्रायः सभी को प्रिय होती है। —प्रेमचन्द

१४. सोने और हीरे के समान, प्रशंसा का मूल्य सिर्फ उसके दुर्लभत्व में ही होता है। —एस. जानसन

१५. यदि तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारी प्रशंसा करें तो पहले तुम दूसरों की प्रशंसा करना सीखो। —एमर्सन

१६. प्रशंसा वह हथियार है जिससे शत्रु भी मित्र बनाया जा सकता है। —दयानन्द सरस्वती

* * *

बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोलें बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका है मोल ।।

—रहीम

तुलसी झगरा बड़न के, बीच परहु जनि धाय।
लड़े लोह पाहन दोऊ, बीच रुई जरि जाय ।।

—तुलसीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रार्थना

१. प्रार्थना वही कर सकता है जिसकी आत्मा शुद्ध हो । — संत मैकेरियस

२. हे ईश्वर, मेरी प्रार्थना है कि भीतर से सुन्दर बन सकूँ । — सुकरात

३. सर्वोत्तम प्रार्थना वह है जिसमें कम से कम शब्द हों । — ल्यूथर

४. वारिश का परिणाम शरीर पर और उसके द्वारा मन पर होता है तो प्रार्थना का परिणाम हृदय के द्वारा आत्मा पर होता है । — विनोबा भावे

५. अपने दुर्गुणों का चिन्तन और परमात्मा के उपकारों का स्मरण यही सच्ची प्रार्थना है। — हितोपदेश

६. हमारी प्रार्थना सर्व-सामान्य भलाई के लिए होनी चाहिए, क्योंकि ईश्वर जानता है कि अच्छा क्या है। — सुकरात

७. प्रार्थना का आमंत्रण निश्चय ही आत्मा की व्याकुलता का द्योतक है । प्रार्थना पश्चात्ताप का एक चिह्न है । प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होने की आतुरता को सूचित करती है । — महात्मा गांधी

८. प्रार्थना ऐसे करो, मानो सब कुछ ईश्वर पर निर्भर है । काम ऐसे करो, मानो सब कुछ मनुष्य पर निर्भर है। — फ्रांसिस कार्डिनल स्पेलमैन

९. प्रार्थना विश्व-मानव के अन्तर की एक शैया में से व्याकुल शतदल की भाँति समस्त जल-राशि के आवरण को ठेलकर आलोक के अभिमुख होती है । — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१०. प्रार्थना धर्म का निचोड़ है। प्रार्थना याचना नहीं है, यह तो आत्मा की पुकार है । प्रार्थना दैनिक दुर्बलताओं की स्वीकृति है, यह हृदय के भीतर चलनेवाले अनुसंधानों का नाम है। — महात्मा गांधी

११. प्रार्थना में हम अपनी सीमाओं को कृतज्ञता–भाव से स्वीकार करते हैं । प्रार्थना में हम अपने को अज्ञ मानते हैं, इसी कारण प्रार्थना से बल मिलता है। — जैनेन्द्रकुमार

१२. जितना विश्व समझता है, प्रार्थना से उससे कहीं अधिक कार्य होता है । — टेनीसन

१३. असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं। — जयशंकर प्रसाद

१४. उसकी प्रार्थना सर्वोत्तम है, जिसका प्रेम सर्वोत्तम है । — कॉलरिज

१५. प्रार्थना नम्रता की पुकार है; आत्मशुद्धि का, आत्मनिरीक्षण का आह्वान है। — महात्मा गांधी

१६. जो देवताओं की बातें सुनते हैं, देवता उनकी सुनते हैं। — होमर

* * *

हृदय नम्र होता नहीं, जिस नमाज के साथ ।
ग्रहण नहीं करता कभी, उसको त्रिभुवन नाथ ।।

— मैथिलीशरण गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेम

१. प्रेम हृदय के समस्त सद्भावों का शान्त, स्थिर, उद्गारहीन समावेश है । — प्रेमचन्द

२. प्रेम बलिदान है, आत्म-त्याग है, ममत्व का विस्मरण है। — भगवतीचरण वर्मा

३. प्रेम स्वर्गीय शक्ति का जादू है । इसमें पड़कर राक्षस भी देवता बन जाते हैं । — सुदर्शन

४. मनुष्य को अपनी ओर खींचनेवाला यदि जगत में कोई असली चुम्बक है तो वह केवल प्रेम है। — महात्मा गांधी

५. प्रेम आंखों से नहीं, हृदय से होता है। अतः प्रेम के देवता को अंधा बताया गया है। — शेक्सपियर

६. प्रेम ही से सृष्टि का जन्म होता है, प्रेम ही से उसकी व्याख्या होती है और अंत में प्रेम में ही वह विलीन हो जाती है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

७. प्रेम थकान को मिटाता है, दुःख को सुख बनाता है। जीवन की वाटिका में प्रेम का गुलाब खिलकर अपने चारों ओर सुगन्ध बिखेर देता है। प्रेम भगवान का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। — वाल्टेयर

८. प्रेम की कोई जाति नहीं, कोई धर्म नहीं, विचार-विवेक और भलाई-बुराई का उसे कुछ ज्ञान नहीं। — शरच्चन्द्र

९. पारस्परिक प्रेम हमारे सभी आनन्दों का शिरोमणि है। — मिल्टन

१०. नारी की आत्मा प्रेम में वास करती है। — श्रीमती सिगोरने

११. प्रेम ही सबसे बड़ा शिक्षक है, प्रेम ही सर्वोत्कृष्ट शांतिदायक है। — स्वेट मार्डन

१२. प्रेम चन्द्र के समान है, यदि वह बढ़ेगा नहीं तो घटना आरम्भ हो जायेगा। — सीगर

१३. परमात्मा पूजा का नहीं, प्रेम का भूखा है। — स्वामी दयानन्द सरस्वती

१४. मानव की समस्त दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करनेवाला अमोघ पदार्थ, प्रेमभरे विचार से परमात्मा की सबसे बड़ी देन है। — डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

१५. प्रेम मृत्यु से अधिक शक्तिशाली है, मृत्यु जीवन से अधिक शक्तिशाली है। यह जानते हुए भी मानव-मानव के मध्य कितनी संकुचित सीमा खिंची है। — खलील जिब्रान

१६. प्रेम में स्वर्गिक आनन्द और मृत्यु की-सी यंत्रणा है, किन्तु जो प्रेम करता है वही सच्चा सुखी और भाग्यवान है। — गेटे

* * *

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय ।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय ।।

— कबीर

सुर-नर-मुनि की येही रीती ।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती ।।

— तुलसीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुद्धि–बुद्धिमान

१. बुद्धि के सिवा विचार–प्रचार का दूसरा कोई शास्त्र नहीं है, क्योंकि ज्ञान ही अज्ञान को मिटा सकता है। – स्वामी शंकराचार्य

२. बुद्धि आत्मा के इस प्रकार अधीन है जिस प्रकार कोई भोला पुरुष चालाक स्त्री के वश में हो। – शेख सादी

३. बुद्धि तो केवल क्रिया का चेतनाहीन अंग है। भावना का संयोग होने पर ही उस अंग में गति आती है और वे कार्य करने लगते हैं। – विवेकानन्द

४. जिसमें बुद्धि नहीं है उसको बिना सींग का पशु समझना चाहिए। – प्रेमचन्द

५. जिसमें बुद्धि नहीं है उसको शास्त्र से क्या लाभ? जैसे नेत्रहीन मनुष्य के लिए दर्पण बेकार है। – चाणक्य

६. जिस मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं होता अथवा जो बुद्धिद्रोही या अविवेकी होता है वह मनुष्यता से गिर जाता है। – कौटिल्य

७. बुद्धि की स्थिरता के बिना कोई भी आदर्श पूरा नहीं होता। – विनोबा भावे

८. भगवान ने बुद्धि की कोई सीमा निर्धारित नहीं की। – बेकन

९. जो दूसरों को जानता है; वह विद्वान है। जो स्वयं को जानता है वह बुद्धिमान है। – लाओत्से

१०. बुद्धिमानों की बुद्धि के सम्मुख संसार में कुछ भी असाध्य नहीं है। बुद्धि से ही शस्त्रहीन चाणक्य ने सशस्त्र नंद-वंश का नाश कर डाला था। – पंचतंत्र

११. वह व्यक्ति बुद्धिमान है, जो उन वस्तुओं के लिए दुःखी नहीं होता जो उसके पास नहीं है, बल्कि उनसे प्रसन्न रहता है, जो उसके पास हैं। – एपिक्टेटस

१२. जिसने जान लिया कि मैं बुद्धिमान नहीं हूँ, उसके बुद्धिमान बनने की आशा की जा सकती है। – साइरस

१३. थोड़ा पढ़ना, अधिक सोचना; कम बोलना, अधिक सुनना–यह बुद्धिमान बनने के उपाय हैं। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१४. बुद्धिमान विवेक से, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से सीखते हैं। – सिसरो

१५. बुद्धिमान की बुद्धि दर्पण के समान है। वह स्वर्गिक प्रकाश लेकर उसे परावर्तित कर देती है। – हेयर

१६. दूसरों के दुर्भाग्य से बुद्धिमान व्यक्ति यह शिक्षा ग्रहण करते हैं कि उन्हें किस बात से बचना चाहिए। – साइरस

* * *

बुद्धि तृष्णा की दासी हुई, मृत्यु का सेवक है विज्ञान।
चेतना तक भी नहीं मनुष्य, विश्व का क्या होगा भगवान॥

– रामधारीसिंह 'दिनकर'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भय (डर)

१. भय से ही दुःख आते हैं, भय से ही मृत्यु होती है और भय से ही बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं। — विवेकानन्द

२. भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है। — विवेकानंद

३. जिस मनुष्य को अपने मनुष्यत्व का भान है वह ईश्वर के सिवा और किसी से भय नहीं करता। — महात्मा गांधी

४. भय हमें मानव-प्रकृति का अनुभव कराता है। — डिजरायली

५. बेवकूफ इंसान भय से पूर्व ही भयभीत हो जाता है, भीरु भय के समय ही डरता है और साहसी भय के बाद डरता है। — रिशर

६. जैसे पके हुए फलों को गिरने के अलावा दूसरा कोई भय नहीं है, उसी तरह उत्पन्न हुए मानव को मृत्यु के सिवा अन्यत्र भय नहीं है। — वाल्मीकि

७. जो तुम्हारी हाजिरी में तुमसे डरता है वह तुम्हारी गैरहाजरी में तुमसे घृणा करता है। — अंग्रेजी कहावत

८. भय वह कर है जिसे अन्तःकरण अपराध को देता है। — सिवेल

९. भय की भावनाओं पर धर्मों का प्रारम्भ हुआ, यह बात झूठ नहीं। — जैनेन्द्रकुमार

१०. तब तक ही भय से डरना चाहिए जब तक वह पास नहीं आता परन्तु भय को अपने निकट आता हुआ देखकर प्रहार करके उसे नष्ट करना ही उचित है। — चाणक्य

११. सच्चे शौर्य की मृत्यु से जितना दुःख नहीं होता उससे कहीं अधिक दुःख बुजदिली के भय से होता है। — सर पी. सिडनी

१२. किसी भारी विपत्ति का भय हल्के आघात को वैसे ही भुला देता है जैसे घातक की तलवार देखकर कोई प्राणी रोग-शैया से उठकर भागता है। — प्रेमचन्द

१३. मानव जिससे डरता है उससे प्यार नहीं करता। — अरस्तू

१४. जिसे हारने का डर है, उसकी हार निश्चित है। — नेपोलियन

१५. डर सदैव अज्ञानता से पैदा होता है। — एमर्सन

१६. डरनेवाला मौके पर ऐसे बुरे काम कर जाता है कि बाद में उसको ही ताज्जुब होने लगता है। — विनोबा भावे

* * *

भय ते भक्ति सब करैं, भय ते पूजा होय।
भय पारस है जीव को, निर्भय होय न कोय॥

—कबीर

सचिव, वैद, गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन तीनि कर, होइ बेगि ही नास॥

—तुलसीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भलाई

१. भलाई जितनी अधिक की जाती है उतनी ही अधिक फैलती है। — मिल्टन

२. जो दूसरों की भलाई करता है वह अपनी भलाई अपने-आप कर लेता है। भलाई फल में नहीं अपितु कर्म करने में ही है; क्योंकि शुभ कर्म करने का भाव ही अच्छा पुरस्कार है। — सेनेका

३. मनुष्य की भलाई करने के अलावा और अन्य किसी कर्म द्वारा मनुष्य भगवान के इतने समीप नहीं पहुँच सकता। — सिसरो

४. जो भलाई में अतिशय लीन है, उसको भला होने का समय नहीं मिलता। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

५. भलाई रह जाती है, इसके अतिरिक्त सब वस्तुएँ नष्ट हो जाती है। — जापानी कहावत

६. भलाई का मार्ग भय से पूर्ण है, परन्तु परिणाम अत्युत्तम है। — दयानंद सरस्वती

७. भलाई बुराई का अभाव नहीं है, अपितु उस पर विजय है। — सर अर्नेस्ट बोर्न

८. जो भलाई से प्रेम करता है वह देवताओं की पूजा करता है, आदरणीयों का सम्मान करता है और ईश्वर के पास रहता है। — एमर्सन

९. भलाई करना कर्त्तव्य नहीं आनन्द है, क्योंकि वह तुम्हारे स्वास्थ्य और सुख की वृद्धि करता है। — जरथुष्ट्र

१०. क्या तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हें भला कहें, तो तुम स्वयं को भला मत कहो। — पैस्कल

११. मर्द कितना ही बुरा क्यों न हो, वह भला बन सकता है, मगर औरत के लिए भले बनने के सब रास्ते उसी क्षण बन्द हो जाते हैं, जब समाज उसके कलंक की बात पर विश्वास कर लेता है। — शरण

१२. दुर्जनों के साथ भलाई करना सज्जनों के साथ बुराई करने के समान है। — सादी

१३. भलाई करना मनुष्य का सबसे शानदार कर्त्तव्य है। — सेफोक्लीज

१४. जैसे एक छोटे से दीप का प्रकाश बहुत दूर तक फैलता है, उसी तरह इस बुरी दुनिया में भलाई बहुत दूर तक चमकती है। — शेक्सपियर

१५. भले आदमी की यही पहचान है कि वह यह न जाने कि दूसरों को हानि कैसे पहुँचाई जाती है। — साइरस

१६. पुष्प की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती परंतु मानव के सद्गुण की महक सब तरफ फैल जाती है। — चाणक्य

* * *

जो तोकों काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहिं फूल को फूल है, वाको है तिरसूल॥
— कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन

१. मन बड़ा चंचल है, वह मानवात्मा को मथ डालता है। जैसे समीर को दबाना, वैसे मन को वश में करना कठिन है। — शरण

२. मन ही मनुष्य को स्वर्ग या नरक में बिठा देता है। स्वर्ग या नरक में जाने की कुंजी भगवान ने हमारे हाथ में दे रखी है। — स्वामी शिवानन्द

३. मन बड़ा जादूगर, महान चित्रकार है। मन है ब्रह्मसृष्टि का तत्त्व। संकल्प के बिना सृष्टि नहीं होती और मन के बिना संकल्प नहीं होता। — साने गुरुजी

४. मन का धर्म है मनन करना, मनन में ही उसे आनन्द है, मनन में बाधा प्राप्त होने से उसे पीड़ा होती है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

५. जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया। — स्वामी शंकराचार्य

६. जब तक मन नहीं जीता जाता, राग-द्वेष शान्त नहीं होते, तब तक मनुष्य इन्द्रियों का गुलाम बना रहता है। — विनोबा भावे

७. जब तक मन अस्थिर और चंचल है तब तक अच्छा गुरु और साधु लोगों की संगति मिल जाने पर भी कोई लाभ नहीं होता। — रामकृष्ण परमहंस

८. चलते, खड़े होते, बैठते अथवा सोते हुए जो अपने मन को शान्त रखता है, वह अवश्य ही शांति प्राप्त कर लेता है। — महात्मा बुद्ध

९. मन में दुःख होने पर देह भी सन्तप्त होने लगती है, ठीक वैसे ही जैसे कि तपाये हुए लोहे का गोला डाल देने पर घड़े में रखा शीतल जल भी गर्म हो जाता है। — महाभारत

१०. मन का दुःख मिट जाने पर शरीर का दुःख भी मिट जाता है। — वेदव्यास

११. दुखते हुए फोड़े में कितना मवाद भरा है यह उस समय मालूम होता है जब नश्तर लगाया जाता है। मन का विष उस समय मालूम होता है जब कोई उसे खोलकर हमारे सामने रख देता है। — प्रेमचन्द

१२. मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है, विषयासक्त मन बन्धन के लिए है और निर्विषय मन मुक्त माना जाता है। — ब्रह्मबिन्दु उपनिषद्

१३. जैसे प्रातःकाल सूर्योदय के होते ही अन्धकार दूर भाग जाता है, वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शान्त हो जाती हैं। — वाल्मीकि

१४. मन प्रभु के चरणकमलों का आधार है। अपने मन को प्रभु के चरणकमलों में लगा देना चाहिए। — गुरु तेग बहादुर

१५. मन प्राप्त के प्रति आकर्षण अनुभव नहीं करता, अप्राप्त की ओर जाता है। — जैनेन्द्रकुमार

१६. मन ही अपने लिए जीवन की राह बनाता है और मृत्यु की राह भी मन में ही तैयार होती है, विचार उस राह की सीमा निश्चित कर देते हैं। — स्वेट मार्डन

* * *

न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय॥
— कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनुष्य (मानव)

१. विश्व आश्चर्यजनक वस्तुओं से भरा पड़ा है; किन्तु मनुष्य से वड़ा कोई आश्चर्य नहीं। – सोफोक्लीज

२. मनुष्य सृष्टिकर्ता के प्रतिविम्व में ईश्वरतुल्य कार्यों के लिए वनाया गया है। – डिजरायली

३. मनुष्य तो दुर्वलताओं की प्रतिमा है जिसमें देवत्व और दानवत्व दोनों का ही समावेश है। – हितोपदेश

४. मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है। – जयशंकर प्रसाद

५. मनुष्य एक दृष्टिगोचर रहस्य है जो दो अनन्तों और दो अपरिमितियों के बीच घूमता है। – कार्लसन

६. मनुष्य नवजात शिशु के तुल्य है, विकास ही उसका बल है। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

७. ईमानदार मनुष्य भगवान की सर्वोत्तम कृति है। – एलेक्जेण्डर पोप

८. मनुष्य उदार हो, तो फरिश्ता है, और नीच हो, तो शैतान। ये दोनों मानवीय वृत्तियों ही के नाम हैं। – प्रेमचन्द

९. यदि तुम पढ़ना जानते हो, तो हर मनुष्य स्वयं में एक पूर्ण ग्रंथ है। – चैंमिंग

१०. केवल मनुष्य ही ऐसा जीव है जो हास्य की शक्ति से सम्पन्न है। – ग्रेविल

११. भगवान ने मनुष्य को अपने ही समान वनाया, पर दुर्भाग्य से इंसान ने भगवान को अपने जैसा वना डाला। – महात्मा गांधी

१२. जल में मीन मौन है, पृथ्वी पर पशु कोलाहल कर रहे हैं एवं आकाश में चिड़िया गा रही हैं, परन्तु मनुष्य में समुद्र का मौन है, पृथ्वी का कोलाहल है एवं आकाश का संगीत है। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१३. मनुष्य अपने को सुगमता से ईश्वर क्यों नहीं समझ लेता, इसका मुख्य कारण पेट है। – नित्शे

१४. मानव का दानव होना उसकी हार है। मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

१५. हँसमुख, विनोदपूर्ण, आशापूर्ण और सन्तुष्ट मनुष्य हर जगह अपना मार्ग वना लेता है। सव उसका सम्मान करते हैं, सव उसकी प्रशंसा करते हैं। – स्वेट मार्डन

१६. इस विश्व में वही मनुष्य अपने कार्य में सफल होते हैं, जो अपनी परिस्थितियों को अनुकूल वना लेते हैं और यदि वे बना नहीं सकते तो अपने अनुकूल परिस्थितियों को पैदा कर लेते हैं। – जार्ज बर्नार्ड शॉ

* * *

यह मनुष्य आकार चेतना का है विकसित,
एक विश्व अपने आवरणों में है निर्मित।

– जयशंकर प्रसाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माता (मातृत्व)

१. माता का हृदय बच्चे की पाठशाला है। — बीचर

२. माता अपने कुरूप बालक को भी सुन्दर समझती है। — प्रेमचन्द

३. माता संतान का सुख देखती है, आराम देखती है, उसकी क्षुधा-तृप्ति करती है, उसे शोक में सान्त्वना देती है, उसके रोगी होने पर सुश्रूषा करती है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

४. माता आप चाहे पुत्र को कितनी ही ताड़ना दे, वह गवारा नहीं करती कि कोई दूसरा उसे कड़ी निगाह से भी देखे। — प्रेमचन्द

५. माता के समान शरीर का पालन-पोषण करनेवाली, चिन्ता के समान देह को सुखानेवाली, स्त्री के समान शरीर को सुख देनेवाली और विद्या के समान शरीर को अलंकृत करनेवाली दूसरी वस्तु नहीं है। — चाणक्य

६. माँ के बलिदानों का प्रतिशोध कोई बेटा नहीं कर सकता, चाहे वह भूमण्डल का स्वामी ही क्यों न हो। — प्रेमचन्द

७. माँ के ममत्व की एक बूंद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठी है। — जयशंकर प्रसाद

८. भाई-बहिनों को एक करनेवाली कोई शक्ति है तो मातृ-प्रेम है। — विनोबा भावे

९. बच्चों के लिए बाप एक फालतू-सी चीज है, एक विलास की वस्तु है, जैसे घोड़े के लिए चने या बाबुओं के लिए मोहनभोग। माँ रोटी-दाल है, मोहनभोग उम्रभर न मिले तो किसका नुकसान है, मगर एक दिन रोटी-दाल के दर्शन न हों, तो फिर देखिए, क्या हाल होता है। — प्रेमचन्द

१०. मानव वही होते हैं जो उनकी माताएँ उन्हें बनाती हैं। — एमर्सन

११. बच्चे का भाग्य सदैव उसकी माँ की कृति है। — नेपोलियन

१२. शिशु की सुश्रूषा करने से माता को शक्ति और सदैव सम्मान देने के कारण उसे माता कहते हैं। — स्कन्दपुराण

१३. वीर माताओं से देश का मुख उज्ज्वल होता है, जो देश-हित के सामने मातृस्नेह की धूल बराबर भी परवाह नहीं करतीं। उनके पुत्र देश के लिए होते हैं, देश पुत्र के लिए नहीं होता। — प्रेमचन्द

१४. मातृत्व का गर्व और आनन्द आँखों में संजीवनी-सी भर देता है। — प्रेमचन्द

१५. मातृत्व में ही नारीत्व की पूर्णता है। — महादेवी वर्मा

१६. मातृत्व महान गौरव का पद है, इस पद में कहीं अपमान और धिक्कार और तिरस्कार नहीं मिला। माता का काम जीवन-दान देना है। — प्रेमचन्द

* * *

माता का वात्सल्य धन्य है, धन्य-धन्य उसकी उदारता।
सब कुछ हो पर माँ न रहे तो जीवन में सारी असारता॥

— परमेश्वर द्विरेफ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुक्ति (मोक्ष)

१. मुक्ति शब्द का अर्थ छूटना है। यहाँ प्रश्न होता है, किससे छूटना ? उत्तर स्पष्ट है कि दु:ख अर्थात् बन्धनों से छूटना मुक्ति है। जहाँ बन्धन नहीं, वहाँ मुक्ति भी नहीं। जीवात्मा बद्ध है, इसलिए इसको मुक्ति की आवश्यकता है। — स्वामी दयानन्द

२. मुक्ति शून्यता में नहीं, पूर्णता में है, पूर्णता सृष्टि करती है, ध्वंस नहीं करती। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

३. अनुकरण से मुक्ति नहीं मिलती, मुक्ति मिलती है ज्ञान से। — शरच्चंद्र

४. मुक्ति का चरम लक्ष्य प्रेम है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

५. परमेश्वर के ज्ञान बिना मुक्ति पाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है। — स्वामी दयानन्द

६. न तो कष्टों को निमंत्रण दो और न उनसे भागो। जो आता है, उसे झेलो। किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। — विवेकानन्द

७. कृत कर्मों का फल भोगे बिना मुक्ति नहीं है। — महावीर स्वामी

८. कर्म को स्वार्थ की ओर से परामर्थ की ओर ले जाना ही मुक्ति है, कर्म का त्याग मुक्ति नहीं है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

९. केवल वीर ही मुक्ति को सरलतापूर्वक पा सकता है, न कि कायर। — विवेकानन्द

१०. मुक्त पुरुष के जीवन का चिन्तन करने से हमें अपनी मुक्ति के दर्शन होते हैं। — ज्ञानदेव

११. मोक्ष किसी स्थान पर रखा हुआ नहीं मिलता और न उसको ढूँढ़ने के लिए किसी दूसरे गाँव को ही जाना पड़ता है। हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है। — शिवगीता

१२. मोक्ष आत्मा का अनंत सुखमय रहना है। उस सुख की न कोई उपमा ही है और न कोई गणना ही। — महावीर स्वामी

१३. वासना-क्षय का नाम ही मोक्ष है और यही जीवन्मुक्ति कहलाती है। — शंकराचार्य

१४. बन्धन और मोक्ष के दो ही आश्रय हैं—ममता और ममता-शून्यता; ममता से प्राणी बन्धन में पड़ता है और ममतारहित होने पर मुक्त हो जाता है। — वेदव्यास

१५. कायर जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त नहीं हो सकता। — गुरु गोविंदसिंह

१६. जब तक संसार में कीट, पतंग आदि की मुक्ति न हो जायगी तब तक मैं अपनी मुक्ति की आकांक्षा नहीं करता। — भगवान बुद्ध

* * *

पंडित पूत सपूत सुधी पतिनी पति-प्रेम परायन भारी।
जानै सबै गुन मानै सबै जन दान विधान दया उरधारी॥
'केसव' रोगनि ही सों वियोग संजोग सुभोगन सो सुखकारी।
साँच कहै जग माहिं लहै जस एक यहै चहुँ वेद विचारी॥

— केशवदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ख (मूर्खता)

१. विचार-हीन मनुष्य ही मूर्ख है। — शंकराचार्य

२. मूर्ख का हृदय उसके मुख में रहता है, जबकि ज्ञानी की जिह्वा उसके हृदय में। — कौटिल्य

३. मूर्खों की मूर्खता से लाभ उठाना पाप ही है। — आचार्य चतुरसेन

४. वह मूर्खों में भारी मूर्ख है जो जानता है कि इस संसार में सुख है। — गुरु रामदास

५. मूर्ख मानव परस्पर बातचीत करनेवाले दूसरे लोगों की भली-बुरी बातें सुनकर उनसे बुरी बातों को ही ग्रहण करता है, ठीक वैसे ही, जैसे सूअर अन्य अच्छी खाद्य वस्तुओं के होते हुए भी विष्ठा को ही अपना आहार बनाता है। — महाभारत

६. यत्नपूर्वक पेरने से रेत में से तेल निकालना सम्भव है; मृगतृष्णा से प्यासे की प्यास बुझाना सम्भव है; ढूँढने से खरगोश का सींग भी मिल सकता है परन्तु मूर्ख का मन जिस वस्तु की ओर झुक गया है उससे हटाना सम्भव नहीं है। — भर्तृहरि

७. जल से आग को रोकना सम्भव है, छतरी से धूप का निवारण करना सम्भव है, मस्त हाथी भी अंकुश से वश में किया जा सकता है, गौ, गधा आदि पशुओं को डंडे से वश में कर सकते हैं, रोग का निदान अनेक प्रकार की औषधियों से दूर करना सम्भव है और मंत्र द्वारा जहर भी उतर जाता है, इस तरह पृथ्वी पर सब चीजों की शास्त्रोक्त औषध है, किन्तु मूर्ख की कोई औषध नहीं है। — भर्तृहरि

८. जितने प्रश्नों के उत्तर बुद्धिमान सात वर्षों में दे सकता है उससे कहीं अधिक प्रश्न मूर्ख एक घण्टे में पूछता है। — जापानी कहावत

९. अपनी सैकड़ों की हानि सह ले परन्तु विवाद न करे, यह बुद्धिमान का मत है, और बिना कारण ही कलह कर बैठना यह मूर्ख का लक्षण है। — हितोपदेश

१०. एक गुणवान पुत्र ही बेहतर है, सौ मूर्ख पुत्र नहीं। एक चन्द्रमा सारा अन्धकार दूर कर देता है जो झुण्ड के झुण्ड तारे नहीं कर पाते। — चाणक्य

११. उसी पत्थर से दुबारा टकराना मूर्खता है। — सिसरो

१२. मूर्खता से बढ़कर अन्य कोई जगत में दुःख देनेवाला नहीं है। — योगवसिष्ठ

१३. पर्वतों और वनों में वनचरों के संग विचरना श्रेष्ठ है, परन्तु मूर्खों के संग स्वर्ग में भी रहना बुरा है। — भर्तृहरि

१४. जो पुत्र पैदा ही न हुआ हो अथवा पैदा होकर मृत हो गया हो अथवा मूर्ख हो, इन तीनों में पहले दो ही बेहतर हैं, न कि तीसरा। कारण यह है कि प्रथम दोनों तो एक बार ही दुःख देते हैं, जबकि तीसरा पद-पद पर दुःखदायी होता है। — हितोपदेश

१५. मूर्ख मानव चाहे सुनहले वस्त्र पहन ले फिर भी वे मूर्ख के ही वस्त्र रहेंगे। — रीवारोल

१६. अनजान मानव को सरलता से सुधार सकते हैं, ज्ञानियों को अति सुख से वशीभूत कर सकते हैं, किन्तु अल्पज्ञ मूर्ख को ब्रह्मा भी नहीं सुधार सकते। — भर्तृहरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मृत्यु

१. मृत्यु थकावट के सदृश है, परन्तु सच्चा अंत तो अनंत की गोद में है। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

२. मृत्यु तो प्रभु का आमन्त्रण है। जब वह आए तो द्वार खोलकर उसका स्वागत करो और चरणों में हृदय-धन सौंप अभिवादन करो। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

३. मृत्यु का दूत अंधा और बहरा है। यदि उसके नेत्र और कान होते तो जगत में बहुत से विनाश के हृदयवेधक दृश्य न दिख पड़ते। – सुदर्शन

४. मृत्यु को प्रायः जितने निमन्त्रण दिये जाते हैं, यदि वह सबको स्वीकार करती तो आज सारा संसार उजाड़ दिखाई देता। – प्रेमचन्द

५. मृत्यु का फव्वारा जीवन के स्थिर जल को नर्तन कराता है। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

६. मृत्यु वह सोने की चाभी है, जो अमरत्व के भवन को खोल देती है। – मिल्टन

७. मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति साफ हो जाती है। जन्मभर की घटनाएँ एक-एक कर सामने आती हैं। समय की धुंध बिल्कुल उन पर से हट जाती है। – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

८. मृत्यु के बारे में सदैव प्रसन्न रहो, और इसे सत्य मानो कि भले आदमी पर जीवन में या मृत्यु के पश्चात् कोई बुराई नहीं आ सकती। – सुकरात

९. मृत्यु से नया जीवन मिलता है। जो व्यक्ति और राष्ट्र मरना नहीं जानते वे जीना भी नहीं जानते। – जवाहरलाल नेहरू

१०. कुलटा पत्नी, कपटी मित्र, जवाब देनेवाला सेवक और सर्प के गृह में रहना मृत्यु ही है, इसमें सन्देह नहीं। – चाणक्य

११. मृत्यु साथ ही चलती है, साथ ही बैठती और सुदूरवर्ती राह पर भी साथ-साथ जाकर साथ ही लौट आती है। – वाल्मीकि

१२. यदि चाहते हो कि तुम्हारे मरते ही लोग तुम्हें भूल न जायें तो पठनीय लिखो या कुछ ऐसा करो जो लिखने योग्य हो। – फ्रैंकलिन

१३. मृत्यु उसकी मुक्तिदायिनी है जिसे स्वाधीनता मुक्त नहीं कर सकती, यह उसकी चिकित्सक है जिसे औषध निरोग नहीं कर सकती, यह उसकी आनन्ददायिनी है जिसे काल सान्त्वना प्रदान नहीं कर सकता। – कोल्टन

१४. मृत्यु भी धर्मनिष्ठ प्राणी की रक्षा करती है। – कौटिल्य

१५. मृत्यु सारे प्राणियों को भगवान की दी हुई देन है। फर्क सिर्फ समय और तरीके का है। – महात्मा गांधी

१६. जब भी मैं मरूँ, मैं चाहता हूँ कि मुझे अच्छी तरह जाननेवाले मेरे बारे में कहें कि मैंने हमेशा कांटे को उखाड़कर जहाँ फूल उग सकता है वहाँ फूल रोपा है। – अब्राहम लिंकन

* * *

जा मरने से जग डरै, मेरे मन आनन्द।
कब मरिहों कब पाइहों, पूरन परमानन्द ॥
– कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मौन

१. मौन वार्तालाप की एक महान कला है। — हैजलट

२. भय से उत्पन्न मौन पशुता और संयम से उत्पन्न मौन साधुता है। — हरिभाऊ उपाध्याय

३. मौन का इससे अधिक हितकर रूप कुछ नहीं हो सकता कि वह झूठे आरोप और मानहानि का उत्तर बन जाय। — जॉसेफ ऐडिसन

४. जो सही जीवन जीता है और सही है, उसके मौन में दूसरे के शब्दों से अधिक शक्ति होती है। — फिलिप्स ब्रुक्स

५. वाणी का वर्चस्व रजत है किन्तु मौन कंचन है। — रामधारीसिंह 'दिनकर'

६. मुझे बोलने पर अक्सर खेद हुआ है; चुप रहने पर कभी नहीं। — साइरस

७. नारी का मौन मनुष्य की वाणी के समान होता है। — बेन जॉनसन

८. मौन ज्ञानियों की सभा में अज्ञानियों का आभूषण है। — भर्तृहरि

९. मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिए तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं। — महात्मा गांधी

१०. चींटी से अच्छा कोई उपदेश नहीं देता, और वह मौन रहती है। — फ्रैंकलिन

११. मौन निद्रा के सदृश है। यह ज्ञान में नई स्फूर्ति पैदा करता है। — बेकन

१२. आओ, हम मौन रहें ताकि फरिश्तों की कानाफूसियाँ सुन सकें। — एमर्सन

१३. मौन में शब्दों की अपेक्षा अधिक वाक्‌शक्ति होती है। — कार्लाइल

१४. आपद् में मौन रहना अति श्रेयस्कर है। — ड्राइडेन

१५. क्रोध को जीतने में मौन जितना सहायक होता है, उतनी और कोई भी वस्तु नहीं। — महात्मा गांधी

१६. जैसे घोंसला सोती हुई चिड़ियों को आश्रय देता है वैसे ही मौन तुम्हारी वाणी को आश्रय देता है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

* * *

तोड़ो मौन की चट्टान, फोड़ो अहं का व्यवधान;
आकुल प्रान के रस-गान, भीतर ही न जाएँ मर।
बोलो, जोर से बोलो, व्यथा की ग्रंथियाँ खोलो,
संजोलो मन कि फूटें, कण्ठ से फिर गीत के निर्झर।

— भारतभूषण अग्रवाल

वाद-विवादे विष घना, बोले बहुत उपाध।
मौन गहे सबकी सहै, सुमिरै नाम अगाध।।

—कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यौवन (जवानी)

१. यौवन एक निरन्तर मादकता है, यह बुद्धि का ज्वर है। — लारो शोकी

२. यौवन विकारों को जीतने के लिए मिला है। उसे हम व्यर्थ ही न जाने दें। — महात्मा गांधी

३. संसार की सबसे उत्तम देव-दुर्लभ वस्तु यौवन है। — प्रेमचन्द

४. यौवन का शक्ति-प्रवाह बहुधा बौद्धिक आँखों की दृष्टि-ज्योति को हरण कर लेता है, मनुष्य की सूझ-बूझ, सतर्कता पर पानी फेर देता है। — कौटिल्य

५. यौवन की नयी उमंग ऐसी चीज है कि उसके जोश में आकर मनुष्य पहाड़ को भी चूर-चूर कर सकता है। — एमर्सन

६. असावधान यौवन का भविष्य दयनीय बुढ़ापा होता है। — फ्रैंकलिन

७. यह सच है और बहुत प्रसिद्ध है कि जैसे वृद्धावस्था में बुद्धिमत्ता होती है वैसे ही यौवन में विवेकहीनता होती है। — सिसरो

८. यौवन को प्रेम की इतनी क्षुधा नहीं होती जितनी आत्म-प्रदर्शन की। प्रेम की क्षुधा पीछे आती है। — प्रेमचन्द

९. जिन्दगी और दौलत की तरह जवानी को भी जाते देर नहीं लगती। — जयशंकर प्रसाद

१०. जीवन में आया हुआ यौवन समय की राह नहीं ताका करता, वह तो आंधी के उन आमों के समान होता है जो कि तीव्र झोंके के लगते ही शाखा को छोड़कर पृथ्वी पर लोटने लगते हैं। — शरण

११. युवावस्था बहुत सुन्दर है, संदेह नहीं, परन्तु जहाँ तक जीवन की गहनता की जाँच होती है, वहाँ यौवन का कोई मूल्य नहीं रह जाता। — दास्ताएव्स्की

१२. जवानी में हम सीखते हैं और प्रौढ़ावस्था में समझते हैं। — मारी एब्नर-एशनबाच

१३. जवानी जोश है, बल है, दया है, साहस है, आत्मविश्वास है, गौरव है, और है वह सब कुछ जो जीवन को पवित्र, उज्ज्वल और पूर्ण बना देता है। जवानी का नशा घमण्ड है, निर्दयता है, स्वार्थ है, शेखी है, विषय-वासना है, कटुता है और सब कुछ जो जीवन को पशुता, विकार और पतन की ओर ले जाता है। — प्रेमचन्द

१४. यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुत्व और अविवेक इन चारों में से हरेक अनर्थकारी होता है। जहाँ ये चारों होते हैं, वहाँ की तो बात ही क्या ? — हितोपदेश

१५. देश और मानव के लिए जवानी आशा, साहस एवं शक्ति का काल है। — डब्ल्यू. आर. विलियम्स

१६. युवावस्था हर समय नये जवाबों की चेष्टा करती है, जिससे नये प्रश्न उत्पन्न किये जा सकें। — वॉल्ट केली

* * *

सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न यौवन थिर रहे, सदा न जीवे कोय ॥

— अज्ञात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजनीति

१. राजनीति के समान कोई दूसरा जुआ नहीं है। — डिजरायली

२. कारागार की अपेक्षा राजनीति में उससे अधिक स्वतन्त्रता नहीं है। — विल रोजर्स

३. राजनीति साधुओं के लिए नहीं है। — लोकमान्य तिलक

४. राजनीति कुछ इंसानों के लाभार्थ बहुत-से व्यक्तियों का उन्माद है। — एलेक्जेण्डर पोप

५. आधुनिक राजनीति मूलतः मनुष्यों का नहीं अपितु शक्तियों का संघर्ष है। — हेनरी ऐडम

६. व्यावहारिक राजनीति यथार्थ को स्वीकार न करने में है। — हेनरी ऐडम

७. राजनीति विपत्तियों को खोजने, उसे सर्वत्र प्राप्त करने, गलत निदान करने और अनुपयुक्त चिकित्सा करने की कला है। — सर अर्नेस्ट वेम

८. राजनीति कहती है, हाथ आये दुश्मन को छोड़ना और अपनी हार खरीदना एक ही चीज के दो नाम हैं। — चाणक्य

९. मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नहीं है। धर्म से विलग राजनीति मृतक शरीर के तुल्य है जो केवल जला देने योग्य है। — महात्मा गांधी

१०. राजनीतिक दृष्टि से ऐसा कुछ भी उचित नहीं, जो नैतिक दृष्टि से अनुचित हो। — डेनियल ओ' कॉनेल

११. राजनीति नीति का राज नहीं चाहती। वह तो राज ही चाहती है। राज करने और राज रखने की ही नीति को वह चाहती है, पर क्या वह नीति है जो आँख राज पर रखे और जिन पर वह राज करे उन पर पाँव रखने की सोचे? — जैनेन्द्रकुमार

१२. राजनीति वेश्या के समान अनेक प्रकार से व्यवहार में लायी जाती है। कहीं झूठी, कहीं सच, कहीं कठोर और प्रिय भाषिणी होती है, कहीं हिंसक और दयालु होती है, कहीं कृपण और कहीं उदार होती है, कहीं अधिक द्रव्य व्यय करनेवाली और कहीं बहुत संचय करनेवाली होती है। — भर्तृहरि

१३. राजनीति में कुंज की पुष्प-शैया जल उठती है। लाल फूल अंगारों का रूप धारण कर लेते हैं और शीतल समीर सर्पों की फुफकार बन जाती है। — डा. रामकुमार वर्मा

१४. मानव-स्वभाव का ज्ञान ही राजनीतिक शिक्षा का आदि और अन्त है। — हेनरी ऐडम

१५. राजनीतिज्ञ पारे की तरह है। यदि तुम उस पर उँगली रखने का प्रयास करो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता। — आस्टिन

१६. समस्त राजनीतिक दल अंत में अपने ही झूठों से नष्ट हो जाते हैं। — जॉन अरबुथनर

* * *

राजनीतियों के पदों में अंतिम नाश गँसा है।
तृष्णा का विकास भरमा कर नर को कब न हँसा है?
— उदयशंकर भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लज्जा

१. लज्जा एक संकेत है जिसे प्रकृति पवित्रता और सम्मान का निवास दिखाने के लिए बाहर लटका देती है । — गाट होल्ड

२. यदि कोई लड़की लज्जा त्याग देती है तो वह अपने सौन्दर्य का सबसे बड़ा आकर्षण खो देती है । — सेंट ग्रेगरी

३. पाप के समय लज्जा प्रकृति की चेतावनी है और पुण्य के गौरव का प्रमाण है । — थामस फूलर

४. लज्जा ने सदैव वीरों को परास्त किया है, जो काल से भी नहीं डरते वे भी लज्जा के सामने खड़े होने की हिम्मत नहीं करते । आग में कूद जाना, तलवार के सामने खड़ा हो जाना, इसकी अपेक्षा कहीं सहज है । लाज की रक्षा के लिए बड़े-बड़े राज्य मिट गए हैं, रक्त की नदियाँ बह गई हैं, प्राणों की होली खेल डाली गई हैं । — प्रेमचन्द

५. यह बात याद रखनी चाहिए कि फिजूल की लज्जा जरूरी लज्जा को मार डालती है । क्योंकि फिजूल की लज्जा खुद ही एक शर्मनाक चीज है । — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

६. संसार की लाज आँखों से दूर की जा सकती है, लेकिन मन से नहीं । — प्रेमचन्द

७. लज्जाशीलता रमणियों का सबसे सुन्दर आभूषण है । — प्रेमचन्द

८. धनहीन प्राणी को जब कष्ट-निवारण का कोई उपाय नहीं रह जाता तो वह लज्जा को त्याग देता है । — प्रेमचन्द

९. लज्जा नारी के चरित्र का दर्पण है । — जयशंकर प्रसाद

१०. स्त्री लज्जा द्वारा इतना कुछ कह जाती है कि मनुष्य उतना धर्मोपदेश में भी नहीं कह सकता । — अरनोल्ड हॉल्देन

११. लज्जा नारीजीवन का अमूल्य रत्न है । उसे जिस नारी ने खो दिया उसका जीवित रहना ही व्यर्थ है । वह चाहे जितने धनवान या भरे-पूरे घर की हो, उसका मूल्य नहीं रहता । — महाभारत

१२. लज्जा नारी-जाति का अमूल्य आभूषण है । इसे पहनकर असुन्दरी भी आकर्षण का केन्द्र बन जाती है । — जयशंकर प्रसाद

१३. नारी के लिए लज्जा एक छुपा खजाना है । — रामधारीसिंह 'दिनकर'

१४. जब हम अपनी भूल पर लज्जित होते हैं, तो यथार्थ बात आप ही आप मुंह से निकल पड़ती है । — प्रेमचन्द

१५. लज्जा तो दुर्बल स्वभाव का लक्षण है । बहुत-से व्यक्ति अपने पिता का परिचय देने में भी लज्जा का अनुभव करते हैं । — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१६. सब धर्मों में लज्जा एक छुपा खजाना है । लज्जा ही सबकी जड़ है । — महाभारत

* * *

लाली बन सरस कपोलों में, आँखों में अंजन-सी लगती ।
कुंचित अलकों सी घुंघराली, मन की मरोर बन कर जगती ।।

— जयशंकर प्रसाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विचार

१. आप अपने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त करते हैं, वह सब आपके विचारों के ही प्रभाव के कारण है और उसी के अनुसार उनका रूप, रंग और गुण भी होता है। —स्वेट मार्डन

२. विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है। —विनोबा भावे

३. अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है। —स्वामी रामतीर्थ

४. मनुष्य का जीवन वही है जो उसके विचार बनाते हैं। —मार्कस औरेलियस

५. सद्‌विचारों से कोमल कोई तकिया नहीं है। —फ्रेंच कहावत

६. लोग उन भयानक विचारों को भूल जाते हैं, जो उनके अपने मन में चक्कर काटते रहते हैं, और उन्हीं विचारों को दूसरों में पाकर रुष्ट हो जाते हैं। —समरसेट मॉम

७. बिना विचार के सीखना परिश्रम नष्ट करना है, बिना शिक्षा प्राप्त किये विचार करना भयावह है। —कन्फ्यूशस

८. विचार पुष्पों को चुनने के समान है और सोचना उनको माला में गूँथना। —श्रीमती स्वेटशीन

९. सुन्दर विचार जिनके साथ हैं, वे कभी एकान्त में नहीं हैं। —सर पी. सिडनी

१०. जो विचार कार्यरूप में परिणत नहीं होता, उसकी 'गर्भपात' से तुलना की गयी है। उस कर्म की, जो विचार पर आश्रित नहीं है उसकी अंधेरखाने और अराजकता में गिनती है। —जवाहरलाल नेहरू

११. अच्छे प्रकार से अपने विचारों की रक्षा करो, क्योंकि विचार स्वर्ग में सुने जाते हैं। —यंग

१२. महान विचार जब कार्यरूप में परिणत हो जाते हैं, तब महान कृतियाँ बन जाती हैं। —हैजलिट

१३. दुष्ट विचार ही मनुष्य को दुष्ट कर्म की ओर ले जाता है। —उपनिषद्

१४. जो बातें विचार पर छोड़ दी जाती हैं वे कभी पूरी नहीं होतीं। —हरिभाऊ उपाध्याय

१५. केवल मूर्ख और मृतक ये दो ही अपने विचारों को कभी नहीं बदलते। —लावेल

१६. आचरण-रहित विचार कितने अच्छे क्यों न हों उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए। —महात्मा गांधी

* * *

आचारी सब जग मिला,
मिला विचारि न कोय।
कोटि अचारी वारिये,
एक विचारि जो होय।

—कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्या

१. विद्या स्वयं ही शक्ति है। —बेकन

२. विद्या अमूल्य और अनश्वर धन है। —ग्लैडस्टन

३. विद्या के अलावा और कोई श्रेष्ठ दान नहीं है। —थामस फुलर

४. विद्या विनय को देती है, नम्रता से योग्यता मिलती है, योग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। —हितोपदेश

५. विद्या अविद्या को वैसे ही नष्ट कर देती है जैसे कि तेज अन्धकारसमूह को नष्ट कर देता है। —स्वामी शंकराचार्य

६. विद्या कामधेनु है। —चाणक्य

७. विद्या का अन्तिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। —महात्मा गांधी

८. परमात्मा को प्राप्त करानेवाली विद्या ही वास्तव में विद्या है। —स्वामी विवेकानन्द

९. जैसे कुदाली से खोदकर मनुष्य पाताल के जल को प्राप्त करता है वैसे ही गुरुगत विद्या सेवा से प्राप्त होती है। —चाणक्य

१०. जो मानव अपनी विद्या और ज्ञान को कार्यरूप में परिणत कर सकता है वह दर्जनों कल्पना करनेवालों से श्रेष्ठ है। —एमर्सन

११. जिसके पास विद्यारूपी नेत्र नहीं वह अन्धे के समान है। —हितोपदेश

१२. जैसे सूर्य सबको एक-सा प्रकाश देता है, बरसात सबके लिए बरसती है, उसी तरह विद्या-वृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए। —महात्मा गांधी

१३. जो विद्या पुस्तक में रखी हो, मस्तिष्क में संचित न की गयी हो और जो धन दूसरे के हाथ में चला गया हो, आवश्यकता पड़ने पर न वह विद्या ही काम आ सकती है और न वह धन ही। —हितोपदेश

१४. विद्यारूपी धन को चोर चुरा नहीं सकता, राजा दण्ड के रूप में ले नहीं सकता, भाई हिस्से में बाँट नहीं सकता, उसका कोई बोझ नहीं होता, वह दान देने से नित्य बढ़ती है, विद्या सब धनों में श्रेष्ठ है। —अध्यात्म रामायण

१५. सुख चाहनेवाले को विद्या कहाँ ? विद्या चाहनेवाले को सुख कहाँ ? सुख की चाह हो तो विद्या छोड़ दे और विद्या चाहिए तो सुख का त्याग करे। —महाभारत

१६. सुकर्म विद्या का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए। —सर पी. सिडनी

* * *

विद्या के सम धन नहीं, जग में कहत सुजान।
विद्या ही से मनुज लघु, होवे भूप समान ।।
सुख चाहै विद्या पढ़ै, विद्या है सुख हेतु।
भव-सागर से तरन को, विद्या है दृढ़ सेतु ।।

—अज्ञात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विवेक

१. असाधारण मात्रा में साधारण ज्ञान को ही विवेक कहते हैं। — कॉलरिज

२. विवेक बुद्धि की पूर्णता है, जीवन के सभी कर्त्तव्यों में वह हमारा पथ-प्रदर्शक है। — ब्रूचे

३. विवेक जीवन का नमक और कल्पना उसकी मिठास है। एक उसको सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है। — बोवी

४. साधारणतः मानव सत्य की अपेक्षा बाहरी आकार से ही अनुमान लगाते हैं। सभी के नेत्र होते हैं; किन्तु किसी-किसी को ही विवेक का वरदान मिलता है। — मेकियोवेली

५. अपने विवेक को अपना शिक्षक बना लो; कर्म को वचन के अनुरूप और वचन को कर्म के अनुरूप कर लो। — शेक्सपियर

६. अन्तःस्फुरणा बलवती है और अन्तःप्रेरणा भी, किन्तु विवेक इनकी अपेक्षा अधिक बलवान है; इसलिए यह अन्तःस्फुरणा और अन्तःप्रेरणा पर नियंत्रण रख सकता है। — स्वामी शिवानन्द

७. विवेक की सबसे प्रत्यक्ष पहचान सतत प्रसन्नता है। — मॉन्तेन

८. विवेक उत्पन्न किये बिना विद्या से परिणाम में श्रम ही हाथ लगता है। — गोस्वामी तुलसीदास

९. विवेक-भ्रष्ट मनुष्य की दुर्गति निश्चय ही होती है। — भर्तृहरि

१०. विवेकशील कीचड़ में पड़े रत्न को भी ग्रहण करते हैं, कीचड़ में लिप्त होने के कारण उसे अग्राह्य नहीं करते। — हरिऔध उपाध्याय

११. विवेक सिर्फ सत्य में पाया जाता है। — गेटे

१२. यौवन और सौन्दर्य में विवेक शायद ही होता है। — होमर

१३. पराक्रम का प्रमुख अंग विवेक है। — शेक्सपियर

१४. उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है, विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओं में शोक और आनन्द ये दोनों नहीं होते। — दयानन्द सरस्वती

१५. विवेकी मनुष्य को पाकर गुण सुन्दरता को प्राप्त होते हैं, सोने से जड़ा हुआ रत्न अत्यन्त सुशोभित होता है। — चाणक्य

१६. उड़ते हुए जब हम झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं। — वर्ड्सवर्थ

* * *

समझा समझा एक है, अन-समझा सब एक।
समझा सोई जानिए, जाके हृदय विवेक॥

— कबीर

जड़-चेतन गुन-दोषमय, विश्व कीन्ह करतार।
संत-हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि-बिकार॥

— तुलसीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्वास

१. विश्वास जीवन की शक्ति है। — टालस्टाय

२. विश्वास सारे वरदानों का आधार है। — जर्मी टेलर

३. विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

४. ईश्वर की अपने अन्दर उपस्थिति का चैतन्य ज्ञान ही विश्वास है। — महात्मा गांधी

५. विश्वास से विश्वास उत्पन्न होता है और अविश्वास से अविश्वास। यह प्राकृतिक नियम है। — प्रेमचन्द

६. विश्वास प्रेम की पहली सीढ़ी है। — प्रेमचन्द

७. विश्वास में विश्वास, अपने आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास यही महानता का रहस्य है। —स्वामी विवेकानन्द

८. विश्वास का अभाव अज्ञान है। — स्वामी रामतीर्थ

९. विश्वास प्रेम के समान है, यह विवश नहीं किया जा सकता। जैसे वलपूर्वक प्रेम करना घृणा उपजाता है, वैसे ही धार्मिक विचारों में विवश करना अविश्वास उत्पन्न करता है। — शोपेनहावर

१०. प्रेम सवसे करो, विश्वास कुछ पर करो, किसी का बुरा न करो। — शेक्सपियर

११. विश्वास उन शक्तियों में से एक है जो मानव को जीवित रखती हैं, विश्वास का पूर्ण अभाव ही जीवन का अवसान है। — विलियम जेम्स

१२. महापुरुषों का विश्वास इतना प्रबल और अनन्य होता है कि पानी को घी और बालू को चीनी तक वना सकते हैं। — स्वामी शिवानंद

१३. विश्वास तूफानी सागर में हमको खेता है, पर्वतों को डिगा देता है। विश्वास एक कोमल पुष्प नहीं है जो साधारण वायु के झोंके से कुम्हला जाय। वह हिमाचल के सदृश अडिग है। — महात्मा गांधी

१४. विश्वास हृदय की वह पेंसिल है जो स्वर्गीय वस्तुओं को चित्रित करती है। — टी. वरब्रिज

१५. विश्वास के विना भक्ति नहीं होती। भक्ति के विना भगवान नहीं पिघलते और भगवान की कृपा के विना जीव स्वप्न में भी शांति नहीं प्राप्त करता। — गोस्वामी तुलसीदास

१६. अविश्वासी के श्रेष्ठ विचार से विश्वासी की भूल अधिक अच्छी है। — टामस रसल

* * *

मुझे विश्वास है, शाश्वत नहीं है वेदना कोई।
उसे फिर प्राण मिलते हैं कि जिसने चेतना खोई॥

— भवानीप्रसाद मिश्र

5276

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीरता

१. वीरता ही मनुष्य का सबसे उज्ज्वल गुण है। — प्रेमचन्द

२. वीरता मारने में नहीं है, मरने में है; किसी की प्रतिष्ठा बचाने में है, प्रतिष्ठा गँवाने में नहीं। — महात्मा गांधी

३. वीरता क्या है ? निर्भीक और बेधड़क होकर स्वयं को बड़े से बड़े कष्ट एवं संकट का सामना करने के लिए तैयार रखना। — हरिभाऊ उपाध्याय

४. हम सारे संसार को दिखाकर जो कुछ करना चाहते हैं, उसे बिना दर्शकों के करना सच्ची वीरता है। — ला. रोशफुकोल्ड

५. दूसरों के बल पर वाहवाही होना आसान है। बहादुर वह है, जो अपने बल पर काम करे। — प्रेमचन्द

६. प्राणों का मोह त्याग करना वीरता का रहस्य है। — जयशंकर प्रसाद

७. अहिंसा वीरों की होनी चाहिए, दुर्बलों की कदापि नहीं। जब शस्त्र की धार शरीर में लगती है, तभी वीरता की परीक्षा होती है। — महात्मा गांधी

८. सुन्दरियों के सम्मुख योद्धाओं की वीरता अजेय होती है। रमणी के वचन-बाण योद्धाओं के लिए आत्मसमर्पण के गुप्त संदेश हैं। उसकी एक चितवन कायरों में भी पुरुषत्व प्रवाहित कर देती है। — प्रेमचन्द

९. भय पर आत्मा की शानदार विजय ही वीरता है। — एमियल

१०. आत्मविश्वास वीरता का सार है। — एमर्सन

११. सभी वीरताएँ तुलना पर स्थापित होती हैं। — बेकन

१२. सलामत जगह से वीरता दिखाना सरल है। — एशप

१३. कायरता की भाँति वीरता भी संक्रामक होती है। — प्रेमचन्द

१४. बिना विवेक के वीरता महासमुद्र की लहरों में डोंगी-सी डूब जाती है। — बेकन

१५. शस्त्र-युद्ध में विजय प्राप्त करने की अपेक्षा आत्मविजय करने में अधिक वीरता है। — भर्तृहरि

१६. वीरता कहने की अथवा देखने की चीज नहीं है, पर समय आने पर कर बताने की चीज है। — थामस फुलर

* * *

जो अनेक जन एक पर, मिलकर करें प्रहार।
है उनके वीरत्व को, बार-बार धिक्कार।।

— मैथिलीशरण गुप्त

बात पूछने को विवेक से जभी वीरता जाती,
पी जाती अपमान पतित ही अपना तेज गँवाती।

— रामधारीसिंह 'दिनकर'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शांति

१. मन की शान्ति अनुकूल परिस्थितियों के द्वारा नहीं, बल्कि आन्तरिक रूपान्तर के द्वारा प्राप्त करनी चाहिए । — श्री माँ

२. जहाँ बुद्धि शासन करती है वहाँ शांति में वृद्धि होती है । — स्पेनिश कहावत

३. जिसमें शांति का निवास नहीं है, उसके सारे सद्‌गुण व्यर्थ हैं । — रस्किन

४. शांति मनुष्य की सुखद और स्वाभाविक स्थिति है, युद्ध उसका पतन है, उसका कलंक है । — टामसन

५. शांति की विजय भी युद्ध की विजयों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । — मिल्टन

६. चाहे वह राजा हो अथवा किसान, वह सबसे ज्यादा सुखी है, जिसे अपने घर में शांति प्राप्त होती है । — गेटे

७. मन की शांति का मूल्य जीवन में बहुत है; सम्पत्ति एवं स्वास्थ्य से भी अधिक । — डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

८. यदि सम्मान के साथ शांति नहीं रह सकती, तो वह शांति नहीं कहला सकती । — लार्ड रसेल

९. विषयों का सुख और आत्मा की शांति—इन दोनों में से किसी एक को हमें चुनना है । यदि विश्व में रहकर आत्मिक शांति प्राप्त करनी है, यदि दिव्य जीवन तक पहुँचना है, यदि मृत्यु के इस संसार से मुक्त होना है, तो भौतिक जीवन के फलों को नहीं चखना चाहिए । — शिलर

१०. शांति का मूलाधार शक्ति है । — महाभारत

११. युद्ध के लिए तैयार रहना शांति स्थापित रखने के लिए एक बहुत प्रभावशाली साधन है । — वाशिंग्टन

१२. शांति अपनी मर्यादाओं की स्वीकृति है । — जैनेन्द्रकुमार

१३. संतोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं, उन्हें जो शांति और सुख होता है, वह धन के लोभियों को, जो इधर-उधर दौड़ा करते हैं, नहीं प्राप्त होता । — चाणक्य

१४. अपने अन्दर ही यदि शांति मिल गई तो सारा विश्व शांतिमय प्रतीत होता है । — योगवसिष्ठ

१५. शांति की कल्पना में रत रहना, जबकि संघर्ष आवश्यक हो, निश्चित रूप से शान्ति मिटाना है । — वेदव्यास

१६. जिस मनुष्य ने अपनी सारी इच्छाओं का त्याग कर दिया है एवं मैं और मेरे मन के भाव से जो मुक्त हो गया है वही शांति पाता है । — महात्मा गांधी

* * *

सात द्वीप नव खंड लौं, तीनि लोक जग माँहि ।
तुलसी शान्ति समान सुख, और दूसरो नाँहि ।।

— तुलसीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिक्षा

१. शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है।
— डॉ. जान जी. हिबन

२. शिक्षा का मतलब है, व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास। — जैनेन्द्रकुमार

३. शिक्षा मानवात्मा के लिए वैसी ही है जैसे संगमरमर के टुकड़े के लिए शिल्पकला।
— एडीसन

४. संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है। — निराला

५. जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है —हमारा सेवा-भाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरसता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागरित न हुई, तो कागज की डिग्री व्यर्थ है। — प्रेमचन्द

६. सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा के आधार हैं। — महात्मा गांधी

७. देह और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है, उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। — प्लेटो

८. शिक्षा का महान उद्देश्य ज्ञान नहीं, कर्म है। — हर्बर्ट स्पेन्सर

९. शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है। — बर्क

१०. जिस शिक्षा में समाज और देश की कल्याण-चिंता के तत्त्व नहीं है, वह कभी सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती। — रस्किन

११. शिक्षा प्राप्त करने के तीन आधारस्तम्भ हैं—अधिक निरीक्षण करना, अधिक अनुभव करना एवं अधिक अध्ययन करना। — केथराल

१२. युवकों को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखें। — मदनमोहन मालवीय

१३. शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है। — स्वामी विवेकानन्द

१४. हरेक प्रकार की शिक्षा भविष्य के प्रतिबिम्बों में से जन्म लेती है तथा वह स्वयं भविष्य के प्रतिबिम्बों को बनाती है। शिक्षा का मुख्य कार्य तो यह है कि वह व्यक्तियों के भविष्य के प्रतिबिम्बों को स्पष्ट कर सके, सुधार सके तथा उन्हें बड़ा बना सके। — एल्विन टोफलर

१५. हमारी आज की शिक्षा में चाहे जितने सद्‌गुण हों, किन्तु उसमें जो बड़ा दुर्गुण है वह यही है कि उसमें बुद्धि को ऊँचा और परिश्रम को नीचा स्थान दिये जाने की भावना है।
— महात्मा गांधी

१६. जो लोग माता-पिता, गुरु और स्वामी की शिक्षा को स्वाभाविक ही सिर चढ़ाकर उसका पालन करते हैं उन्होंने ही जन्म लेने का लाभ पाया है। — गोस्वामी तुलसीदास

* * *

वह शिक्षा केहि काम की, जनि काहू पै होय।
लहै सहसुन व्यय किये, काम न आवै कोय॥

— रामेश्वर करुण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृति

१. विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान ही संस्कृति है। — मैथ्यू आर्नल्ड

२. जो संस्कृति महान होती है, वह दूसरों की संस्कृति को भय नहीं देती, बल्कि उसे साथ लेकर पवित्रता देती है। गंगा महान क्यों है? दूसरे प्रवाहों को स्वयं में मिला लेने के कारण ही वह पवित्र रहती है। —साने गुरुजी

३. संस्कृति उस दृष्टिकोण को कहते हैं जिससे कोई समुदायविशेष जीवन की समस्याओं पर दृष्टिनिक्षेप करता है। — डॉ. सम्पूर्णानंद

४. स्वभाव की गम्भीरता, मन की समता, संस्कृति के अंतिम पाठों में से एक है और यह समस्त विश्व को वश में करनेवाली शक्ति में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न होती है। — स्वेट मार्डन

५. संस्कृति एकान्तिक वस्तु नहीं है। उसका अर्थ हर एक जगह एक ही नहीं होता। — महात्मा गांधी

६. कोई भी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती यदि वह अपने को अन्य से पृथक रखने का प्रयास करे। — महात्मा गांधी

७. व्यक्ति की भाँति राष्ट्र भी जीवित रहते हैं और मरते हैं, किन्तु संस्कृति का कभी पतन नहीं होता। — मेजिनी

८. हिन्दू संस्कृति आध्यात्मिकता की अमर आधारशिला पर स्थित है। — स्वामी विवेकानन्द

९. संस्कृति की चाहे कोई भी परिभाषा क्यों न हो, किन्तु उसे व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र की सीमाओं में बाँधना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। — जवाहरलाल नेहरू

१०. संस्कृति का सही मूल्यांकन अच्छी नारियों का उस पर प्रभाव है। — एमर्सन

११. उपासना, मत और ईश्वर सम्बन्धी विश्वास की स्वतन्त्रता भारतीय संस्कृति की परम्परा रही है। — अटल बिहारी वाजपेयी

१२. भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो सम्पूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पवित्र भावना में निहित है। — मदनमोहन मालवीय

१३. जो मार्ग, जो विधि, जो क्रिया, हमें भगवान की तरफ ले जाती है, वह हिन्दू संस्कृति, आर्य संस्कृति, सज्जन संस्कृति, सुसंस्कृति है; जो हमें उससे विमुख बनाती है, वह अहिन्दू, अनार्य दुर्जन संस्कृति और कुसंस्कृति है। — हरिभाऊ उपाध्याय

१४. आंशिक संस्कृति शृंगार की ओर दौड़ती है, अपरिमित संस्कृति सरलता की ओर। — बोवी

१५. सभ्यता शरीर है, संस्कृति आत्मा, सभ्यता जानकारी और भिन्न क्षेत्रों में महान एवं दुःखदायी खोज का परिणाम है; संस्कृति ज्ञान का परिणाम है। — श्री प्रकाश

१६. भारत की एकता का मुख्य आधार, एक संस्कृति है, जिसका प्रवाह कहीं नहीं टूटा। यही इसकी विशेषता है। भारतीय एकता अक्षुण्ण है क्योंकि भारतीय संस्कृति की धारा निरन्तर बहती रही है और बहेगी। — मदनमोहन मालवीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सज्जन-सज्जनता

१. सज्जनों का यह लक्षण है कि वे सदैव दया करनेवाले और करुणाशील होते हैं। — महाभारत

२. मेघों के समान सज्जन पुरुष भी दान करने के लिए ही किसी वस्तु को ग्रहण करते हैं। — कालिदास

३. व्यवहारों की शुद्धता और दूसरों के प्रति आदर यही सज्जन मनुष्य के दो मुख्य लक्षण हैं। — डिजरायली

४. सज्जन पुरुष पच जाने पर अन्न की, यौवन बीत जाने पर स्त्री की, संग्राम जीत लेने पर शूर की और संसार-सागर को पार कर लेने पर तपस्वी की प्रशंसा करते हैं। — महाभारत

५. सज्जन पुरुष बिना कहे ही दूसरों की आशा पूरी कर देते हैं, जैसे सूर्य स्वयं ही घर-घर प्रकाश फैला देता है। — चाणक्य

६. सज्जनों का स्वभाव सूप के समान होता है जो दोषरूप कंकड़ आदि को दूर कर देता है और गुणरूप धान्य को अपने पास रख लेता है। दुर्जनों का स्वभाव चलनी के समान होता है जो दोषरूप चोकर आदि अपने पास रख लेती है और गुणरूप आटे आदि को अलग गिरा देती है। — भर्तृहरि

७. शांति और हर्ष सज्जन पुरुष के लक्षण हैं। — एमर्सन

८. सज्जन दूसरों का उपकार बहुत विनम्रता से करता है और ऐसा लगता है कि वह उपकार पा रहा है जबकि वह कर रहा है। — सी. न्यूमैन

९. संसार में सज्जन पुरुष ही स्वतंत्र होते हैं, नीच पुरुष सेवक होते हैं। — प्लूटार्क

१०. सज्जनता उत्कृष्ट मानवता के लिए दूसरा शब्द है। — टार्स्कन

११. कीचड़ से कंचन को उठा लेना, यह तो सज्जनों की रीति है। — विनोबा भावे

१२. सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी, नीच से सफल याचना भी अच्छी नहीं। — कालिदास

१३. सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी पुरुष को पीड़ित नहीं करता। — सी. न्यूमैन

१४. भला काम करने का स्वभाव ऐसा साधन है जिसे शत्रु छीन नहीं सकता और चोर चुरा भी नहीं सकता। — मा. ओरिलिगस

१५. सत्य और न्याय का समर्थन मनुष्य की सज्जनता और सभ्यता का एक अंग है। — प्रेमचन्द

१६. राजकीय ठाठ-बाट की अपेक्षा सुजनता की निर्धनता में अधिक मिठास है। — रस्किन

* * *

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटें सौ वार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥

— रहीम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्य

१. सत्य प्रभु की आत्मा है और प्रकाश उसकी देह है। —पाइथागोरस

२. सत्य, चन्द्र-मंडल से भी अधिक सौम्य और सूर्य-मंडल से भी अधिक तेजस्वी है। —महावीर स्वामी

३. सत्य के तीन भाग हैं, प्रथम, जिज्ञासा जो कि उसकी आराधना है, द्वितीय ज्ञान जो कि उसकी उपस्थिति है और तृतीय विश्वास जो कि उसका उपभोग है। —बेकन

४. सत्य किरणों की किरण, सूर्यों का सूर्य, चन्द्रमाओं का चन्द्रमा तथा नक्षत्रों का नक्षत्र है—सत्य सबका सारभूत तत्त्व है। —डिकेन्स

५. सत्य एक जलते हुए दीप की भाँति है जो अंधकार में छिपाया नहीं जा सकता, क्योंकि वह अपना प्रकाश स्वयं ले चलता है। —एडवर्ड विल्सन

६. सत्य से बढ़कर धर्म नहीं है। सत्य स्वयं परब्रह्म परमात्मा है। —वेदव्यास

७. सत्य ही समस्त पुण्यों की जड़ है। —गोस्वामी तुलसीदास

८. सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। —मुंडकोपनिषद्

९. सत्य से ही सूर्य तप रहा है। सत्य पर ही पृथ्वी टिकी हुई है। सत्य भाषण सबसे बड़ा धर्म है। सत्य पर ही स्वर्ग प्रतिष्ठित है। —विश्वामित्र

१०. सत्य के लिए सब-कुछ त्यागा जा सकता है, पर सत्य को किसी भी चीज के लिए छोड़ा नहीं जा सकता, उसकी बलि नहीं दी जा सकती। —स्वामी विवेकानंद

११. सत्य का स्थान हृदय में है, मुख में नहीं। केवल मुख से निकलने के कारण कोई बात सत्य नहीं बन जाती। —शरच्चन्द्र

१२. सत्य का ज्ञान धार्मिक विश्वास का परिणाम नहीं होता वरन् गम्भीर नैतिक आचरण का अनुभव होता है। —डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

१३. परमेश्वर सत्य है; यह कहने की बजाय 'सत्य ही परमेश्वर है' यह कहना अधिक उपयुक्त है। —महात्मा गांधी

१४. जिस प्रकार सूर्य की किरणें किसी पदार्थ से अपवित्र नहीं की जा सकतीं उसी प्रकार सत्य को भी बाह्य स्पर्श से अपवित्र करना असम्भव है। —मिल्टन

१५. असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है। —हरिभाऊ उपाध्याय

१६. सत्य को कह देना ही मेरे मजाक करने का तरीका है। संसार में यह सबसे विचित्र मजाक है। —जार्ज बर्नार्ड शॉ

* * *

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप॥

—कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहस

१. अपने दोषों को स्वीकार करना एक उत्कृष्टतम साहस है। — माताजी

२. साहस की परीक्षा प्रायः मरने में नहीं, जीवित रहने में होती है। — अलफिएरी

३. साहस दो प्रकार का होता है। एक प्रकार है तोप के सामने अड़ जाना। दूसरा प्रकार है आध्यात्मिक विश्वासों पर डटे रहना। — विवेकानंद

४. बिना निराश हुए पराजय को सह लेना धरा पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है। — आर. जी. इंगरसोल

५. बिना डर के, स्वयं को संकट में डालना साहस नहीं है अपितु उचित ध्येय में दृढ़ निश्चयी होना है। — प्लूटार्क

६. संकट में साहस होना आधी सफलता प्राप्त कर लेना है। — प्लाउटस

७. यह समझकर भी कि सही क्या है, उसे न करना साहस की कमी है। — कन्फ्यूशस

८. सच्चा साहस और शराफत सदा साथ रहते हैं। सबसे वीर लोग सबसे अधिक क्षमाशील व झगड़ों से बचने के लिए प्रयासशील होते हैं। — थैकरे

९. सच्चे साहस में न तो अधीरता है और न जल्दबाजी। — माताजी

१०. साहस गया कि मनुष्य की आधी समझदारी उसके साथ गई। — एमर्सन

११. मानव के सभी गुणों में साहस प्रथम गुण है; क्योंकि यह सभी गुणों का दायित्व लेता है। — चर्चिल

१२. थोड़े से साहस के अभाव में काफी प्रतिभा विश्व से खो जाती है। प्रत्येक दिन ऐसे अपरिचित को कब्र में भेजता है जिनकी भीरुता ने उनको प्रथम प्रयास से वंचित रखा है। — सिडनी स्मिथ

१३. साहस और धीरज धर्म-रथ के दो पहिए हैं। — गोस्वामी तुलसीदास

१४. अपना बोझ दूसरे पर न लादना और बिना संकोच दान करना बड़े साहस का काम है। — जुन्नेद

१५. वही सच्चा साहसी है जो कभी निराश नहीं होता। — कन्फ्यूशस

१६. साहसी इस बात की खोज नहीं करते कि शत्रु कितने हैं; किन्तु वे तो यह खोजते हैं कि वे कहाँ हैं? — योननागोची

* * *

सचमुच साहस ही से होते,
वसुधा के व्यापार सभी।
श्रम साहस के बिना किसी ने,
किया प्रबल प्रतिकार कभी?

— रामेश्वर करुण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन्दरता (सौन्दर्य)

१. सुन्दरता को अलंकारों की जरूरत नहीं। कोमलता अलंकारों का भार नहीं सह सकती। — प्रेमचन्द

२. सुन्दरता एक बाल के द्वारा भी हमें अपनी ओर खींच लेती है। — एलेक्जेण्डर पोप

३. अगर सुन्दरता के साथ सद्गुण हैं, तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उसके साथ दुर्गुण हैं, तो वह आत्मा का नरक है। वह बुद्धिमान की होली और मूर्ख की भट्ठी है। — क्वार्ल्स

४. सुन्दरता बिना शृंगार के ही मन मोहती है। — सादी

५. सुन्दर वस्तु चिर-आनन्ददायिनी है। उसकी माधुरी नित्य बढ़ती रहती है, उसका कभी ह्रास नहीं होने पाता। — कीट्स

६. वास्तविक सौन्दर्य हृदय की पवित्रता में है। — महात्मा गांधी

७. सौन्दर्य जब सो जाता है तो और भी मादक हो जाता है। — शरण

८. सौन्दर्य ईश्वर के ऐश्वर्य का रूप है, सौन्दर्य शक्ति है, सौन्दर्य आदर्श है। वह स्फूर्ति देता है, पवित्रता देता है, बलि की प्रेरणा देता है। — जैनेन्द्रकुमार

९. सौन्दर्य सौन्दर्य को आकर्षित करता है। — ले हण्ट

१०. सौन्दर्य और पवित्रता का संयोग क्वचित् ही होता है। — जुवेनल

११. किसी परिचयपत्र की अपेक्षा व्यक्तिगत सौन्दर्य स्वयं एक बड़ी सिफारिश है। — अरस्तू

१२. सौन्दर्य का अस्तित्व ही सौन्दर्य का समर्थन है। — डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

१३. सौन्दर्य का आदर्श सादगी और शांति है। — गेटे

१४. पुरुष ! स्वामी बनकर सौन्दर्य की सराहना कर, सेवक बनकर आत्मसमर्पण न कर। — डॉ. रामकुमार वर्मा

१५. बिना सद्गुण के सुन्दरता अभिशाप है। — चीनी कहावत

१६. स्वर्ण से भी शीघ्र सुन्दरता चोरों को आकर्षित करती है। — जापानी कहावत

* * *

सुन्दरता पर कभी न भूलो, शाप बनेगी वह जीवन में।
लक्ष्य-विमुख कर भटकायेगी तुम्हें व्यर्थ फूलों के वन में॥

— रामधारीसिंह 'दिनकर'

सुन्दर मुख देखें सुख होई, सुन्दरता चाहे सब कोई।
चंद्र बदनि जन सेवें जाको, धरती सरग मिला है ताको॥

— नूर मुहम्मद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेवा

१. सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। सेवा ही उसके जीवन का आधार है। — प्रेमचन्द

२. सेवा और त्याग ही भारत का जातीय आदर्श है। इसी भाव को पुनः जगा देना चाहिए। बाकी आप ही आप ठीक हो जायेगा। — स्वामी विवेकानंद

३. सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है। सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, और यही जीवन का लक्ष्य है। — स्वामी शिवानंद

४. सेवा, परोपकार और दुःखी की सहायता मनुष्य के प्रधान कर्तव्य हैं। — जयशंकर प्रसाद

५. बिना प्रदर्शन के जो सेवा करता है वह शीघ्र ऊँचाई पर पहुँच जाता है। — वृन्दावनलाल वर्मा

६. सेवा ही वह सिमेण्ट है, जो दम्पति को जीवनपर्यन्त स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है, जिस पर बड़े-बड़े आघातों का भी कोई असर नहीं होता। जहाँ सेवा का अभाव है, वहीं विवाह-विच्छेद है, परित्याग है, अविश्वास है। — प्रेमचन्द

७. गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। — सरदार वल्लभभाई पटेल

८. बन्धुभाव से की हुई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की हुई सेवा उत्तम है। — रामकृष्ण परमहंस

९. वेद, शास्त्र और पुराणों में प्रसिद्ध है और जगत जानता है कि सेवा बड़ा कठिन धर्म है। — गोस्वामी तुलसीदास

१०. सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है। — वाल्मीकि

११. सेवा के लिए पैसे की जरूरत नहीं होती, जरूरत है अपना संकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबों से एकरूप होने कीं। — विनोबा भावे

१२. लाखों मूंगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है। मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता। ...... मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ। — महात्मा गांधी

१३. लौकिक लोगों की सेवा नौकर-चाकर करते हैं; और अलौकिक लोगों की सेवा साधु, वैरागी और महान पुरुष करते हैं। — हयहया

१४. जो यह सोचते हैं कि किसी प्रकार की सेवा करने योग्य नहीं है, वे कदाचित् पशुओं और वृक्षों को भूल जाते हैं। — अरण्डेल

१५. सेवामार्ग भक्तिमार्ग से भी ऊँचा है। — सुदर्शन

१६. हमारी हर सेवा प्रभु की सेवा है। — स्वामी रामदास

* * *

पूजा यथा समय न प्रभु-नाम-जप; होता शरीर सुख से न कभी मिलाप।
न स्वार्थ ही न परमार्थ-विचार-वात; सेवा किये सब सुखों पर वज्रपात ॥

— महावीर प्रसाद द्विवेदी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दी (राष्ट्रभाषा)

१. हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है। — सुमित्रानंदन पंत

२. हिन्दी देश की एकता की कड़ी है। — डॉ. जाकिर हुसैन

३. हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है। उसे हम सबको अपनाना है। — लालबहादुर शास्त्री

४. हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। — महर्षि स्वामी दयानंद

५. हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है। — डॉ. अमरनाथ झा

६. हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है। — मैथिलीशरण गुप्त

७. हिन्दी की एक निश्चित धारा है, निश्चित संस्कार है। — जैनेन्द्रकुमार

८. देश को किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह (भारत में) केवल हिन्दी ही हो सकती है। — श्रीमती इंदिरा गांधी

९. हिन्दी एक जानदार भाषा है; वह जितनी बढ़ेगी देश को उतना ही लाभ होगा। — जवाहरलाल नेहरू

१०. हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और यदि मुझसे भारत के लिए एक मात्र भाषा का नाम लेने को कहा जाए तो वह निश्चित रूप से हिन्दी ही है। — कामराज

११. हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना भाषा का प्रश्न नहीं अपितु देशाभिमान का प्रश्न है। — एन. निजलिंगप्पा

१२. जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा (हिन्दी) में नहीं चलता तब तक हम यह नहीं कह सकते कि इस देश में स्वराज्य है। — मोरारजी देसाई

१३. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। — महात्मा गांधी

१४. मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगावें। हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है। — विनोबा भावे

१५. देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जानेवाली हिन्दी राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी है। — सुभाषचन्द्र बोस

१६. कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है। — थामिस डेविस

* * *

जिस हिन्दू को है नहीं, हिन्दी का अनुराग।
निश्चय उसके जान लो, फूट गये हैं भाग॥
जिसको प्यारी है नहीं, निज भाषा निज देश।
वह सूकर-सा डोलता, धरे मनुज का भेष॥

— जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हृदय

१. हृदय की कोई भाषा नहीं होती है; हृदय हृदय से बातचीत करता है। — महात्मा गांधी

२. हृदय को ज्ञानरूपी तेल से भिगोये बिना आत्मरूपी ज्योति का प्रकाश बाहर भली-भाँति प्रकट नहीं हो सकता। — स्वामी रामतीर्थ

३. हृदय कृपाण से अधिक शक्तिशाली होता है। — वेण्डेल फिलिप

४. मुखमण्डल हृदय का दर्पण है। — प्रेमचन्द

५. एक सच्चा हृदय सारे संसार की विलक्षण शक्तियों से अधिक मूल्यवान है। — श्री अरविन्द

६. यदि सुन्दर मुख सिफारिश-पत्र है तो सुन्दर हृदय विश्वास-पत्र। — बुलवर

७. केवल बुद्धि की वृद्धि होने से मनुष्य बहुधा हृदयशून्य हो जाता है। दया, प्रेम, शांति आदि हृदय के सात्त्विक गुण हैं। वे बुद्धि के प्रखर तेज से झुलस सकते हैं। — स्वामी विवेकानंद

८. पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा एक बार जब सोना बन जाता है तब उसे चाहे जमीन में गाड़ दो अथवा कतवार में फेंक दो, वह सोना ही बना रहता है, फिर लोहा नहीं होता; उसी प्रकार सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरणस्पर्श से जिसका हृदय एक बार पवित्र हो जाता है, उसका फिर कुछ नहीं बिगड़ सकता, चाहे वह संसार के कोलाहल में रहे अथवा जंगल में एकान्तवास करे। — रामकृष्ण परमहंस

९. ज्ञानी पुरुष का हृदय दर्पण के सदृश होना चाहिए जो किसी वस्तु को विना दूषित किये हुए परिवर्तित कर देता है। — कन्फ्यूशस

१०. पहाड़ों में हरियाली होती है, पाषाणहृदयों में भी रस रहता है। — प्रेमचन्द

११. तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय है, पवित्र वस्तुओं में अति पवित्र भी विशुद्ध हृदय ही है। — वेदव्यास

१२. मानव-हृदय एक रहस्यमय वस्तु हैं। कभी तो वह लाखों की ओर आँख उठाकर नहीं देखता और कभी कौड़ियों पर फिसल पड़ता है। कभी सैकड़ों निर्दोषों की हत्या पर आह नहीं करता और कभी एक बच्चे को देखकर रो पड़ता है। — प्रेमचन्द

१३. मनुष्य के हृदय में देवता कभी-कभी जागता है और पशु हर समय जागा रहता है। — रघुवीरशरण मित्र

१४. सुन्दर हृदय का मूल्य स्वर्ण के सदृश है। — शेक्सपियर

१५. जिनका हृदय मात्र एक बरफ का टुकड़ा है और जिनके हृदय में प्रेम की जलन-तड़पन के लिए बिल्कुल जगह ही नहीं, वे शायद बहुत दिनों तक ताजे बने रहते हैं—क्योंकि शायद वे कंजूस की तरह भीतर और बाहर अपने को सहेज-सहेज कर रख सकते हैं। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१६. जिनके हृदय में मंगलमय भगवान विष्णु का आवास है उनके यहाँ सर्वदा उत्सव, सर्वदा मंगल और सदा लक्ष्मी का निवास रहता है। — रामानुजाचार्य

* * *

रूखा शीशा जो टूटे तो सब कोई सुन पाता है।
कुचला जाना हृदय-कुसुम का किसे सुनाई पड़ता है॥

— जयशंकर प्रसाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षमा

१. क्षमा हृदय का धर्म है। — अज्ञेय

२. क्षमा दंड से अधिक पुरुषोचित है। क्षमा वीरस्य भूषणम्। — महात्मा गांधी

३. क्षमा से बढ़कर और किसी बात में पाप को पुण्य बनाने की शक्ति नहीं है। — जयशंकर प्रसाद

४. क्षमा तेजस्वी पुरुषों का तेज है। क्षमा तपस्वियों का ब्रह्म है, क्षमा सत्यवादी पुरुषों का सत्य है। क्षमा यज्ञ है और क्षमा मनोनिग्रह है। — वेदव्यास

५. क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है। जो इस प्रकार जानता है, वह सबकुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है। — महाभारत

६. क्षमा दंड से बड़ी है। दंड देता है मानव, किन्तु क्षमा प्राप्त होती है देवता से। दंड में उल्लास है पर शांति नहीं और क्षमा में शांति भी है और आनन्द भी। — भर्तृहरि

७. क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है। क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत को धारण कर रक्खा है। — वेदव्यास

८. यदि कोई दुर्बल मानव तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना ही वीरों का काम है, परन्तु यदि अपमान करनेवाला बलवान हो तो उसको अवश्य दण्ड दो। — गुरु गोविन्दसिंह

९. हम जितना ही अधिक जानते हैं उतने ही क्षमाशील बनते हैं। जिस किसी की भी अनुभूति जितनी ही गहरी होती है, उसकी संवेदना उतनी ही व्यापक। — दस्तेल

१०. विद्वान क्षमा से ही शुद्ध होते हैं। — मनु

११. क्षमा ही यश है, क्षमा ही धर्म है, क्षमा से ही चराचर जगत स्थित है। — वाल्मीकि

१२. क्षमा से क्रोध को जीतो, भलाई से बुराई को जीतो, दरिद्रता को दान से जीतो और सत्य से असत्यवादी को जीतो। — महात्मा बुद्ध

१३. क्षमा पर मनुष्य का अधिकार है, वह पशु के पास नहीं मिलती। प्रतिहिंसा पाशव धर्म है। — जयशंकर प्रसाद

१४. क्षमा असमर्थ मानवों का गुण है और समर्थों का भूषण है। — वेदव्यास

१५. जो स्वयं शक्तिशाली होकर भी दुर्बल की बातें सहन करता है, उसी को सर्वश्रेष्ठ क्षमा कहते हैं। — महात्मा बुद्ध

१६. संसार में ऐसे अपराध कम हैं जिन्हें हम चाहें और क्षमा न कर सकें। — शरच्चन्द्र

* * *

छिमा बड़ेन को चाहिए, छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात।।

— कबीर

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप।।

— कबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान–ज्ञानी

१. ज्ञान ही वास्तविक सोना अथवा हीरा है । – स्वामी शिवानन्द

२. ज्ञान का मूल्य बहुमूल्य रत्न से भी अधिक है । ज्ञान का निरादर अपने ही मस्तिष्क का अपमान है । – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

३. ज्ञान की अग्नि सुलगते ही कर्म भस्म हो जाते हैं । – स्वामी शंकराचार्य

४. ज्ञान गर्वीला होता है कि उसने बहुत कुछ सीख लिया, बुद्धि विनीत होती है कि वह अधिक कुछ जानती ही नहीं । – काउपर

५. ज्ञान का लक्ष्य सत्य है और सत्य आत्मा की भूख है । – लेसिंग

६. यदि आपके पास ज्ञान है, तो दूसरों को अपने दीप उससे जला लेने दीजिए ।– मार्गेरट फुलर

७. ज्ञान का संदेश देना ही दक्षिणा है । – श्रीकृष्ण (भगवद्‌गीता)

८. ज्ञान मानव-जीवन का सार है । – आचार्य कुन्दकुन्द

९. ज्ञान और कर्म से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है । – महावीर स्वामी

१०. विस्मृत वस्तुओं की स्मृति ही ज्ञान है । – प्लेटो

११. अपनी अज्ञानता का अहसास होना ज्ञान की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है । – डिजरायली

१२. पक्के ज्ञान की एकमात्र पहचान है सिखाने की शक्ति । – अरस्तू

१३. ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए । – महात्मा गांधी

१४. ज्ञानी मनुष्य को संसार लुभा नहीं सकता, मछलियों के कूदने से सागर नहीं उमड़ता । – भर्तृहरि

१५. ज्ञानी मनुष्य इस जगत को स्वर्ग में परिवर्तित कर सकता है । – स्वामी शिवानंद

१६. इच्छा की तृप्ति नहीं वरन् उसकी उपेक्षा ज्ञान कहलाती है । – बर्तोल ब्रेरन्त

* * *

ज्ञान शक्ति है, किन्तु नहीं यदि, वह ईश्वर चरणों पर अर्पित,
असुर दर्प बन वह विध्वंसक, बन जाता जन भू जीवन हित ।

— सुमित्रानंदन पंत

तर्क से तर्कों का रण छिड़ा, विचारों से लड़ रहे विचार,
ज्ञान के कोलाहल के बीच, डूबता जाता है संसार ।
ज्ञान के मरु में चलता हुआ आदमी खोता जाता है,
हृदय के सर का शीतल वारि और कम होता जाता है ।

— रामधारीसिंह 'दिनकर'

5276

Published by : S. R. Gala, for Bookwing Publications & Trading Co. Ltd., Ahmadabad–380 021.
Type-setting by : B. A. Gala, at Mamta Type-setting Works, Ahmadabad–380 021.
Printed by : H. R. Gala, at Ankur Offset, Ahmadabad–380 021.
92 (3)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाला की समाजोपयोगी आरोग्य-विषयक पुस्तकें

१. चरबी घटाइए, चुस्ती बढ़ाइए — डॉ. ध. रा. गाला, डॉ. धीरेन गाला
२. हृदयरोग को रोकिए, आयुष्य बढ़ाइए — "
३. एक्युप्रेशर द्वारा आप ही अपने डॉक्टर — "
४. नेत्ररक्षा — "
५. रसाहार के द्वारा तन्दुरुस्ती और रोगमुक्ति — "
६. स्वयं स्वस्थ रहने की कला — "
७. उपवास की सफलता — "
८. पृथ्वी की संजीवनी : गेहूँ के जवारे — "
९. स्वास्थ्य की सही दिशा : प्राकृतिक चिकित्सा — "
१०. आपका आरोग्य आपके हाथ में (रिफ्लेक्सोलॉजी) — [illegible]न्द्र बोरा
११. १०० वर्ष निरोगी रहिए — मा[illegible] पटेल
१२. योगासन-प्राणायाम कीजिए और निरोगी रहिए — डॉ. पी. डी. शर्मा

GALA

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi